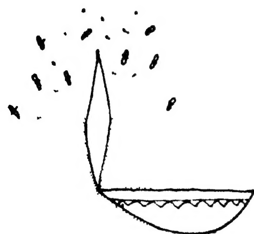
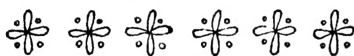


चकबस्त

लखनवी

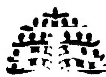


और उनकी शायरी



सम्पादक

सरस्वती सरन 'कैफ़'



राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

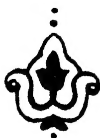


प्रथम संस्करण
जनवरी १९५९

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली



सूची

ज़िक्र क्यों आएगा बज़्मे-शोअ़रा में अपना
मैं तख़ल्लुस का भी दुनिया में गुनहगार नहीं

जीवनी



अंगरेज़ी में एक कहावत है कि "जिन्हें भगवान् प्यार करता है वे नौजवानी में मर जाते हैं।" यह मसल और किसी पर लागू हो या न हो उर्दू में देशभक्ति के तरानों के सबसे मुखर गायक पंडित ब्रजनारायण 'चकबस्त' पर पूरी तरह से लागू होती है जो कि घने अंधेरे में बिजली की भाँति चमककर अपने प्रकाश से सारे काव्य-जगत् को चकाचौंध कर गये।

पंडित ब्रजनारायण 'चकबस्त' एक कश्मीरी ब्राह्मण खानदान में पैदा हुए थे। इस ख़ानदान में लिखने-पढ़ने का शौक़ शुरू ही से रहा था। उनके बुज़ुर्ग ख़ास लखनऊ के रहने वाले थे किन्तु कुछ दिनों के लिए उनके पिता पंडित उदित नारायण 'चकबस्त' फ़ैज़ाबाद चले गए थे। वहाँ पंडित ब्रजनारायण 'चकब्रस्त' का जन्म १८८२ ई० में हुआ।

पंडित ब्रजनारायण ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की। उर्दू फ़ारसी की शिक्षा परम्परानुसार उन्होंने घर पर ली और साथ ही अंगरेज़ी स्कूल में दाख़िल हो गये। उन्होंने १९०५ ई० में कैनिंग कालेज लखनऊ से बी० ए० पास किया और वहीं से वकालत की परीक्षा पास करके १९०८ ई० में वकालत करने लगे। चूंकि मेहनती, समझदार और लगन के पक्के थे इसलिए शीघ्र ही वकालत में चमकने लगे और कुछ ही वर्षों में उनकी

गिनती लखनऊ के बड़े वकीलों में होने लगी।

शायरी का शौक़ उन्हें बचपन ही से था। कहा जाता है कि उन्होंने पहली ग़ज़ल उस वक़्त कही जबकि उनकी उम्र सिर्फ़ नौ बरस की थी। उन्होंने उर्दू कविता की परम्परा के अनुसार कोई उस्ताद नहीं बनाया। यह अच्छा ही हुआ क्योंकि उस्ताद उन्हें अपने ही ढर्रे पर चलाने की कोशिश करता और वे इस तरह शुरू ही से अपना निराला ढंग न अपना पाते। उस्ताद की कमी उन्होंने उर्दू के प्रमुख नये और पुराने कवियों—यथा 'मीर', 'आतिश', 'ग़ालिब', 'अनीस', 'दबीर' आदि—की रचनाओं का गहरा अध्ययन करके पूरी की।

किन्तु मालूम होता है कि प्रारंभ में उन्हें उस्ताद न करने की वजह से साहित्य-संसार में पदार्पण करने में कुछ कठिनाई हुई होगी, क्योंकि उनकी कविताओं के प्रथम पाठ के उदाहरण उनकी जातीय सभाओं ही में मिलते हैं और वह भी रचना-प्रारम्भ के काफ़ी बाद। उनका बार-बार यह कहना कि "मैं शायर नहीं हूं" केवल शिष्टता समझी जाती है। किन्तु इस शिष्टता के साथ ही अपने नये रंग का सगर्व उल्लेख करने में उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। इसी कारण उनकी गर्व-हीनता में एक हल्का व्यंग भी झलकता है। एक क़िते में कहते हैं :—

क़द्रदां क्यों मुझे तकलीफ़े-सुख़न देते हैं
मैं सुख़नवर नहीं शायर नहीं उस्ताद नहीं

१९१० ई० में, जब कि वे अपने 'शरर'-'चकबस्त' विवाद

के कारण काफ़ी ख्याति पा चुके थे 'ख़ुमख़ानाए-जावेद' के लेखक लाला श्रीराम को उन्होंने एक पत्र में लिखा :—

"दोस्तों का दिल बहलाने को कभी-कभी शेर कह लेता हूं। पुराने रंग की शायरी यानी ग़ज़लगोई से नाग्राश्ना हूं। लेकिन इसके साथ मेरा यह अक़ीदा है कि महज़ ख़यालात को तोड़-मरोड़ कर नज़्म कर देना शायरी नहीं है। मेरे ख़याल के मुताबिक़ ख़यालात की ताज़गी के साथ ज़बान में शायराना लताफ़त और अल्फ़ाज़ में तासीर का जौहर होना ज़रूरी है।"

'चकबस्त' ने कविता के अतिरिक्त आलोचना-क्षेत्र में भी शुरू ही से अपनी विद्वत्ता की धाक जमा ली थी। १९०५ ई० में, जब उनकी अवस्था केवल तेईस वर्ष की थी, तत्कालीन प्रख्यात विद्वान मौलाना अब्दुलहलीम 'शरर' ने पंडित दयाशंकर 'नसीम' की मसनवी 'गुल्ज़ारे-नसीम' पर कुछ काव्य-कला संबंधी आपत्तियां उठायी थीं। 'चकबस्त' ने उनका विद्वत्तापूर्ण उत्तर देना शुरू किया। तत्कालीन उर्दू जगत में 'शरर' और 'चकबस्त' की यह क़लमी लड़ाई बहुत दिलचस्पी की चीज़ बन गयी। यह वाद-विवाद बाद में 'मार्का-ए-शरर-चकबस्त' के नाम से छप भी गया है। प्रख्यात उर्दू कवि एवं आलोचक मौलाना 'हसरत' मोहानी ने इस वाद-विवाद के बारे में अपने पत्र 'उर्दू-ए-मुअ़ल्ला' में लिखा कि 'चकबस्त' की दलीलें सुनने के बाद मालूम होने लगा है कि मौलाना 'शरर' ने 'मसनवी गुल्ज़ारे-नसीम' पर जो आपत्तियां उठायी थीं वे ग़लत थीं। यह सिर्फ़ एक आलोचक की राय नहीं है। उर्दू जगत ने 'चकबस्त' ही के

हक़ में फ़ैसला दिया और 'मसनवी गुल्ज़ारे-नसीम' पर इसके बाद किसी ने कोई आपत्ति नहीं उठायी।

इस वाद-विवाद के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक विषयों पर भी 'चकबस्त' बराबर कुछ-न-कुछ लिखा करते थे। 'कश्मीर-दर्पन', 'खदंगे-नज़र', 'अदीब', 'ज़माना' आदि पत्रिकाओं में उनके विद्वत्तापूर्ण लेख बराबर निकलते रहते थे। 'चकबस्त' के ये लेख पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हो गये हैं।

उनकी मृत्यु अचानक ही हुई। १२ फ़रवरी १९२६ ई० को वे एक मुक़द्दमे की पैरवी करने रायबरेली गये। तीसरे पहर उन्होंने बहस की और ६ बजे शाम को लखनऊ आने के लिए रेलगाड़ी पर बैठे। अचानक ही उनके मस्तिष्क पर पक्षाघात हुआ और उनकी ज़बान बंद हो गई। चुनाँचे उन्हें प्लेटफ़ार्म पर उतार लिया गया। यथासंभव उपचार की व्यवस्था की गयी लेकिन उनका अंत समय आ गया था। दो घंटे बाद प्लेटफ़ार्म पर ही उनका देहांत हो गया। ग्यारह बजे रात को मोटर पर उनका शव लखनऊ लाया गया। सारे लखनऊ बल्कि सारे उर्दू जगत में इस समाचार से शोक छा गया। कई शायरों ने तारीखें और मर्सिये लिखे।

अपने अल्प जीवन की अत्यधिक पेशेवर व्यस्तता के कारण 'चकबस्त' कुछ अधिक न लिख सके यद्यपि उन्होंने जो कुछ लिखा वह बेजोड़ था। उनकी कुल पद्य रचनाओं का संग्रह 'सुबहे-वतन' के नाम से प्रकाशित हुआ है।

चकबस्त का काव्य

एक आलोचक ने लिखा है "अफ़सोस! 'चकबस्त' ने लखनऊ स्कूल में जो जगह ख़ाली की है वह आज तक पुर न हो सकी, गो यह सच है कि उनके वतनी जज़्बे से हज़ार 'चकबस्त' पैदा हुए हैं और हो रहे हैं।" इन सीधे-सादे शब्दों में स्पष्ट है कि 'चकबस्त' को आसमान पर नहीं चढ़ाया गया है, किन्तु अगर इस एक ही वाक्य के विभिन्न शब्दों पर ग़ौर किया जाय तो 'चकवस्त' का व्यक्तित्व पूरी तरह उभरकर सामने आ जाता है।

यह स्पष्ट है कि 'चकबस्त' की परम्परा में उनके बाद बहुत से लोगों ने देश-प्रेम से परिपूर्ण कविताएं लिखी हैं किन्तु वे 'चकबस्त' की बनायी हुई राह पर न चल सके। 'इक़बाल' ही की भांति 'चकबस्त' साहित्य-गगन के जाज्वल्यमान नक्षत्र बनकर चमके, अपने प्रकाश की कुछ किरणें भी छोड़ गये, किन्तु उसका स्थान किसी और नक्षत्र ने नहीं लिया। 'इक़बाल' की ही भांति 'चकबस्त' ने भी अपना कोई स्कूल न छोड़ा। उन्नीसवीं शताब्दी में हमें 'नज़ीर' अकबराबादी के रूप में ऐसा एक और उदाहरण मिलता है जब कि कोई उस्ताद अपनी जगह काफ़ी मशहूर होकर भी कोई अपना निज का 'स्कूल' क़ायम नहीं करता।

इस बात का कारण इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता कि 'इक़बाल' और 'चकबस्त' दोनों ने साहित्य के नये तक़ाज़ों के अनुसार अपनी अनुभूतियों का रुख वैयक्तिक समस्याओं से हटाकर सामाजिक समस्याओं की ओर मोड़ दिया था। यहां

किसी तरह की ग़लतफ़हमी न होनी चाहिए। लेखक वैयक्तिक और समाजिक सामस्याओं के बीच कोई हदबंदी क़ायम नहीं करना चाहता, न इन दोनों 'शिविरों' में कवियों और लेखकों का बंटवारा करना चाहता है। कहने का मतलब यह है कि इन दोनों महाकवियों ने मनुष्य की वैयक्तिक समस्याओं का समाधान मुख्यतः सामाजिक रूप से करने की कोशिश की। सूफ़ीवाद की भांति वे कभी सामाजिक जीवन को तटस्थ रूप से न देख सके।

और चूँकि उनकी अनुभूतियों का आधार मुख्यतः सामाजिक था और समाज गतिशील होता है अतएव उनके साहित्यिक व्यक्तित्व में तत्कालीन सामाजिक रूपरेखा का पूरा प्रतिबिंब दिखाई देता है। समाज-शास्त्री जानते हैं कि सामाजिक परिवर्तनों का रूप नदी के बहाव की भाँति समगति नहीं होता बल्कि मेंढक की कुदान (यह उपमा भद्दी लगती हो तो सिंह की छलांग कह लीजिए) की भांति होता है। कभी तो समाज स्थिर-सा मालूम होता है (यद्यपि वास्तव में उसका प्रत्येक अंग प्रगति की तैयारी में लगा रहता है) और कभी अचानक परिवर्तन दिखाई देते हैं। सामाजिक प्रगति की इन्हीं दोनों स्थितियों को विकास (Evolution) तथा क्रांति (Revolution) कहते हैं। क्रांति के लिए न तो हिंसात्मक होना आवश्यक है न क्षणिक। वह तो झटके के साथ परिवर्तन होने का नाम है। इस दृष्टि से उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और बीसवीं का पूर्वार्ध भारतीय समाज के लिए क्रांतिकारी काल कहा जा

सकता है । सामाजिक काल में समस्याएं और उनके समाधान के तौर-तरीक़े क्षण-क्षण बदलते रहते हैं । ऐसी परिस्थिति में समय का थोड़ा सा ही अंतर होने पर दृष्टिकोणों में आमूल परिवर्तन हो जाता है । चूंकि 'इक़बाल' और 'चकबस्त' दोनों ही समाजोन्मुख साहित्यकार थे इसलिए उन पर अपने समय की सामाजिक अनुभूतियों का प्रभाव पड़ा और कुछ ही वर्षों बाद परिस्थितियां इतनी बदल गयीं कि बाद के प्रतिभावान साहित्य-कार इन दोनों से कुछ प्रेरणा के अतिरिक्त और कुछ ग्रहण न कर सके । इसीलिए इन दोनों ने अपने कोई 'स्कूल' न छोड़े और न अब यही मुमकिन है कि कोई बाद का साहित्यकार उनकी जगह ले ले, या उनके क्षेत्र में उनसे आगे बढ़ जाय । उनका क्षेत्र भी उनके साथ ही ख़त्म हो गया ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—सबसे पहले तो हमें 'चकबस्त' की काव्य-चेतना के विकास पर एक सरसरी नज़र डालनी है । 'चकबस्त' ने जब होश संभाला उस समय से अंत समय तक वे लखनऊ ही में रहे । उन्होंने बचपन ही से काव्य-रचना आरंभ कर दी थी । पहले ही कहा जा चुका है कि उनकी पहली ग़ज़ल नौ वर्ष की अवस्था में लिखी गई थी । लखनऊ का निवास और कश्मीरी ब्राह्मणों का ख़ानदानी विद्या-प्रेम । स्पष्ट है कि ऐसे में 'चकबस्त' शुरू से ही लखनवी रंग में पूरी तरह रंग जाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते थे । उनका साहित्य-प्रेम इतना बढ़ा हुआ था कि १६०५ ही में उन्होंने जिस योग्यता से साहित्यिक विवाद में भाग लिया उसे देखकर तत्कालीन विद्वान

उनका लोहा मान गये। हां चूंकि वे जन्मजात कवि थे इसलिए 'नासिख़' स्कूल की बेजान और कोरे शब्दजाल वाली भावविहीन कविता से प्रभावित न हो सके। किन्तु लखनऊ ही की दूसरी साहित्यिक शैली यानी 'आतिश' के स्कूल से वे बहुत प्रभावित हुए। जब तक उन्होंने ग़ज़ल में अपनी अलग राह नहीं बनाई तब तक की उनकी प्रारंभिक ग़ज़लों पर 'आतिश' का असर साफ़ दिखाई देता है। 'आतिश' अनुभूति की तीव्रता, काव्य के प्रवाह और शब्दों के उचित चयन और प्रयोग के पक्षपाती थे। चुनांचे 'चकबस्त' ने भी आरंभ में इन्हीं बातों पर ध्यान दिया।

'आतिश' की अनुभूति की तीव्रता के साथ ही उन्होंने ग़ज़ल में करुणा का पुट 'मीर' से और दार्शनिकता तथा स्वतन्त्र चिंतन 'ग़ालिब' से लिये। चुनांचे उनके शुरू के शेरों में इन तीनों गुणों की झलक मिलती है जो बाद में विकसित होकर एक नये ही रंग में सामने आयी।

इन उस्तादों के अलावा वे मर्सिये के उस्ताद 'अनीस' से बहुत प्रभावित थे। बल्कि कहना तो यह चाहिए कि कुल मिलाकर 'चकबस्त' की कविता 'अनीस' ही की मानवतावादी परंपरा का विकास कही जा सकती है। 'अनीस' एक ओर तो अपनी टकसाली ज़बान, मुहावरों के इस्तेमाल, बंदिश की चुस्ती, शब्दों के उचित चयन और कविता में प्रवाह पैदा करने में अद्वितीय थे तो दूसरी ओर यौन प्रेम को छोड़कर लगभग सभी उत्कृष्ट मानवीय भावनाओं—त्याग, शौर्य, पवित्रता, करुणा—को

उभारने में कमाल रखते थे। मुहर्रम की मजलिसों में, और अन्य अवसरों पर भी, जब 'अनीस' के मर्सिये पढ़े जाते थे तो श्रोतागण द्रवित हो जाते थे और सभी की आँखों से आंसू बहने लगते थे। उत्कृष्ट मानवीय भावों की अभिव्यक्ति की इसी परम्परा ने 'चकबस्त' की रचनाओं में आगे चलकर देश-प्रेम का रूप धारण कर लिया।

इसे भी 'चकबस्त' की स्वातन्त्र्य-प्रियता ही कहा जायगा कि उन्होंने प्रचलित रीति के अनुसार किसी को गुरु नहीं बनाया बल्कि हर जगह से जो चीज़ उन्हें अच्छी दिखाई दी उसे उन्होंने ले लिया और उनकी इस आत्म-शिक्षा ने उनके भावुक हृदय, सत्यप्रियता और विचारशील मस्तिष्क के साथ मिलकर उनके लिए काव्य-जगत में एक अलग मगर ऊंची जगह तैयार कर दी।

देशभक्ति और मानवता प्रेम

उर्दू के बारे में यह एक आम ग़लतफ़हमी है कि उसमें देशभक्ति के भाव नहीं मिलते। किन्तु सत्य यह है कि जब से भारत में राष्ट्रीय चेतना पैदा हुई है तब से अब तक उर्दू में बराबर हमें इस भावना के दर्शन होते हैं। बीसवीं शताब्दी में उर्दू कवियों ने समाजोन्मुख होकर जो कुछ भी लिखा है उसमें 'इक़बाल' की बाद वाली रचनाओं के अतिरिक्त और सब में राष्ट्र-प्रेम, आज़ादी की लगन और देशवासियों के आर्थिक और नैतिक उत्थान की अभिलाषा के भाव कूट-कूट कर भरे हुए हैं। 'हाली', 'अकबर', प्रारंभिक काल में 'इक़बाल',

'जोश', 'फ़ैज़', अहसान 'दानिश', 'हफ़ीज़', 'फ़िराक़' आदि बीसियों प्रमुख कवि ऐसे हुए हैं जिनकी रचनाओं में हर जगह राष्ट्र-प्रेम देखने को मिल जाता है।

किन्तु इसमें संदेह नहीं है कि 'चकबस्त' ने अपनी पूरी काव्य-प्रतिभा को जिस प्रकार देश-प्रेम के लिए उत्सर्ग कर दिया उस तरह किसी और ने नहीं किया। यदि 'चकबस्त' की कविता में से राष्ट्रीयता के तत्व निकाल दिये जाएँ तो फिर कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा। प्रस्तुत पुस्तक के पहले भाग में दी गई सभी नज़्में राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत हैं। प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय समस्याओं पर लिखी गई इन नज़्मों के अलावा और भी जो नज़्में उन्होंने कश्मीरी ब्राह्मणों की जातीय सभाओं के लिए लिखी हैं उनका भी तोड़ इसी पर होता है कि जाति में देशभक्ति के भाव जागृत होने चाहिएं। राष्ट्र-नायकों के देहावसान पर लिखे गये मर्सियों में तो राष्ट्र के दुखी हृदय की पुकार कूट-कूटकर भरी हुई है। जो मर्सिये होनहार नौजवानों की असामयिक मृत्यु पर लिखे गये हैं उनमें भी यही अफ़सोस ज़ाहिर किया गया है कि वे ज़िन्दा रहते तो देश का न मालूम कितना भला करते। यहां तक कि लगभग हर ग़ज़ल में उनका देश-प्रेम खुले रूप में सामने आ गया है—यद्यपि ग़ज़लों में कला की दृष्टि से यह बात बहुत अच्छी नहीं लगती, लेकिन 'चकबस्त' जैसे व्यक्ति किसी भी स्थिति में अपनी देश-प्रेम की भावनाओं पर रोक लगा ही नहीं पाते। पुस्तक में हर जगह इस बात का सबूत मिलेगा ही, फिर भी इस अवसर पर कुछ उद्धरण दिये

जाते हैं जिससे 'चकबस्त' के देश-प्रेम की गहराई और तीव्रता का अंदाज़ा हो सके :—

'ख़ाके-हिन्द' नामक नज़्म का एक बन्द है :—

शैदाए - बोस्तां को सर्वो - समन मुबारक
रंगीं तबीयतों को रंगे-सुख़न मुबारक
बुलबुल को गुल मुबारक गुल को चमन मुबारक
हम बेकसों को अपना प्यारा वतन मुबारक
गुंचे हमारे दिल के इस बाग़ में खिलेंगे
इस ख़ाक से उठे हैं इस ख़ाक में मिलेंगे

'फ़रियादे-क़ौम' में उनकी राष्ट्रीयता का कारुणिक रूप देखिए :—

कहां हैं मुल्क के सरताज, क़ौम के सरदार ?
पुकारते हैं मदद के लिए दरो-दीवार
वतन की ख़ाक से पैदा हैं जोश के आसार
ज़मीन हिलती है, उड़ता है ख़ून बन के ग़ुबार
जगह से अपनी है चित्तौड़ की ज़मीं सरकी
लरज़ रही है कई दिन से क़ब्र अकबर की

ग़ज़लों में भी उनका यही रंग क़ायम है :—

वतन की ख़ाक से मर कर भी हमको उन्स बाक़ी है
मज़ा दामाने-मादर का है इस मिट्टी के दामन में

हम पूजते हैं बाग़े-वतन की बहार को
आँखों में अपनी फूल समझते हैं ख़ार को

मिट्टी हैं गुल जो और किसी बोस्ताँ के हैं
काँटे अज़ीज़ गुलशने - हिन्दोस्ताँ के हैं

'चकबस्त' की राष्ट्रीय चेतना के विकास पर दृष्टि डालने से मालूम होता है कि वे हमेशा प्रगतिशील शक्तियों के ही साथ रहे। किन्तु उन्होंने १९२१ के असहयोग आन्दोलन के बारे में कुछ नहीं लिखा। १९१९ के जलियानवाला बाग़ के गोलीकांड से वे भी मर्माहत हुए थे किन्तु यह मानना ही पड़ेगा कि १९२० के बाद गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीयता ने जो नया मोड़ लिया था वह 'चकबस्त' को प्रभावित न कर सका। उनके विचार विद्यावादी, प्रजातन्त्रवादी लिब्रलों ही के थे। वे देश भक्त पक्के थे किन्तु उनका विश्वास राजनीतिक क्रान्ति में नहीं था। बहर-हाल उनके विचार चाहे जो कुछ हों, उनके देश-प्रेम की सच्चाई और गहराई में कोई संदेह नहीं किया जा सकता।

लेकिन 'चकबस्त' में लिब्रल नेताओं के विपरीत एक और विशेषता ऐसी दिखाई देती है जो शायद इस वजह से पैदा हुई कि वे सच्चे कवि थे। यह विशेषता उनका मानवता-प्रेम है। उनकी इसी विशेषता ने उनकी राष्ट्रीय कविता में भी, जो साधारणतः अपेक्षाकृत कठोर होनी चाहिए, ऐसी कोमलता और स्निग्धता पैदा कर दी है जो उन्हें अपने ढंग का निराला कवि बना देती है। वे शुरू ही से 'दर्दे-दिल' को बहुत महत्व देते हैं और इंसान होने को जीवन का चरम लक्ष्य मानते हैं :—

कुछ बड़ी बात नहीं फ़ाज़िले-दौरां होना
आदमी के लिए मेराज है इंसां होना

और इंसानियत की परिभाषा उनके इस मशहूर शेर में की गयी है :—

दर्दे-दिल, पासे-वफ़ा, जल्वाए-ईमां होना
आदमीयत है यही और यही इंसां होना

'फ़रियादे-क़ौम' शीर्षक से ट्रांसवाल के भारतीयों की दुर्दशा पर उन्होंने जो कविता लिखी है उसमें तो साफ़ मालूम होता है कि उनकी राष्ट्रीयता भी इंसानी हमदर्दी के पीछे-पीछे चलती है। लेकिन इससे भी ज़्यादा उनकी इंसानियत का उभार 'क़ौम के सूरमाओं को विदाई' में दिखायी देता है। वे अपने देश के सैनिकों को हर तरह से जोश दिलाते हैं, यहां तक कि कह देते हैं :

नाव तलवार की है पार लगाने के लिए
यही गंगा है सिपाही के नहाने के लिए

लेकिन इस मौक़े पर भी वे यह कहना नहीं भूलते :—

गो कि दुनिया से मिटे शौकते-क़ैसर का सुराग़
शोलाए-तेग़ से मुर्झाए न तहज़ीब का बाग़
गुल न हो दिल के शिवाले में हमीयत का चिराग़
बेगुनाहों के लहू का न हो तलवार पे दाग़
रास्ता है यही क़ौमों की तबाही के लिए
ख़ून मासूम का दोज़ख़ है सिपाही के लिए

कहना न होगा कि भारतीय संस्कृति में धर्म-युद्ध के बारे में जो कुछ कहा गया है उसका निचोड़ इस एक बन्द में आ गया है। लेखक को हिन्दी या उर्दू की किसी अन्य ऐसी कविता का पता नहीं है जिसमें वीरता और मानव-प्रेम दोनों के भाव इतने उभरकर, इतने समन्वय के साथ और इतने स्वाभाविक रूप में सामने आये हों जितने इस कविता में हैं।

'चकबस्त' का मानवता-प्रेम महज़ नारा न था। उन्होंने सैद्धांतिक रूप से व्यापक रूप में भी मानव-प्रेम की बातें की हैं, और जगह-जगह विशेष अवसरों पर भी उनके दिल की हमदर्दी का सोता फूट निकलता है। अपने नौजवान दोस्तों की मौत पर उन्होंने जो मर्सिये लिखे हैं उनमें उनके बिलखते हुए आत्मीयजनों की दशा का ऐसा मर्मान्तिक वर्णन है जो हमें 'अनीस' के मर्सियों की याद दिला देता है।

उनकी जाति में पहली बार विधवा-विवाह होता है तो उनके अंतर का मानव खिल उठता है। 'बर्क़े-इस्लाह' में कहते हैं :—

कल जिसे ऐन लताफ़त में ख़िज़ां ने लूटा
आज उस बाग़ का शादाब है बूटा बूटा
बेड़ियां कट के गिरीं, क़ुफ़्ले-असीरी टूटा
चाँद मासूम की क़िस्मत का गहन से छूटा

'चकबस्त' पूरे हिन्दू थे, धर्म की पूरी प्रतिष्ठा उनके हृदय में थी किन्तु उसका आधार भी उनके लिए मानव-प्रेम था :—

हमारे और ज़ाहिदों के मज़हब में फ़र्क़ अगर है तो इस क़दर है
कहेंगे हम जिसको पासे-इंसां वो उसको खौफ़े-खुदा कहेंगे

और हृदयहीन कोरे कर्मकांडियों को वे किस नज़र से देखते हैं :

आशना हो कान क्या इंसान की फ़रियाद से
शैख़ को फ़ुर्सत नहीं मिलती खुदा की याद से

'चकबस्त' की ग़ज़लें

शुरू ही में कहा जा चुका है कि 'चकबस्त' पर पुरानी परम्परा और नये विचार दोनों ही का गहरा असर था। किन्तु उन्होंने इन दोनों का 'हसरत' मोहानी की तरह विचित्र सम्मिश्रण नहीं किया बल्कि दिल और दिमाग़ की पूरी ताक़तों से काम लेकर एक अत्यंत सुंदर समन्वय स्थापित कर दिया। उनकी नज़्मों में हमें 'अनीस' के मर्सियों की स्पष्ट छाप मिलती है किन्तु ग़ज़लों में उन्होंने निराला ही रास्ता इख्तियार किया। 'आतिश' की चुस्त बंदिश के साथ उन्होंने 'ग़ालिब' की दार्शनिकता का पुट देकर ग़ज़लों में निराली ही राह निकाली। ग़ज़ल के परम्परागत विषय—वैयक्तिक प्रेम—से शायद वे बहुत ऊब गये थे। ग़ज़ल का पुनरुत्थान भी अधिकतर उनके बाद ही हुआ, इसलिए वैयक्तिक प्रेम को शालीनता पूर्ण ढंग से प्रदर्शित होते उन्होंने नहीं देखा। फिर भी यह स्पष्ट है कि उनकी तर्क-बुद्धि ने उनका साथ कभी नहीं छोड़ा। इसीलिए ग़ज़लों में वे वह मस्ती तो पैदा नहीं कर सके जो कि उनके बाद के कवियों ने की, किन्तु उनकी विशिष्ट दार्शनिकता ने उनकी ग़ज़लों को 'इक़बाल' की ग़ज़लों की भांति परम्परा-विरोधी भी न होने दिया। अपनी विचार-शक्ति को अपनी

काव्य-प्रतिभा के साथ मिलाकर उन्होंने कुछ ऐसे शेर भी लिख दिये जिन्हें आने वाली पीढ़ियां कभी नहीं भूल सकतीं। उदाहरणार्थ :

ज़िन्दगी क्या है ? अनासिर में ज़हूरे-तरतीब
मौत क्या है ? इन्हीं अजज़ा का परेशां होना

उनकी ग़ज़लों के जो शेर उनकी यादगार बन गये हैं वे यद्यपि कहीं-कहीं शुष्क उपदेश के क़रीब जा पहुंचते हैं (किन्तु केवल कहीं-कहीं ही) तथापि ग़ज़ल की ख़ासियतें—नरमी, करुणा, व्यापकता और गागर में सागर भरने की क्षमता—पूरी तरह उन में क़ायम है। इसीलिए उन्हें पढ़ने से दिमाग़ पर किसी तरह का बोझ नहीं पड़ता, कल्पना-शक्ति को ज़ोर लगा कर नहीं बढ़ाना पड़ता और रसानुभूति पूरी हो जाती है। उनकी ग़ज़लें नये ढंग की हैं किन्तु नये प्रयोग की कोटि में नहीं आतीं।

ऊपर की पंक्तियों में 'चकबस्त' की दार्शनिकता की बात आयी है। इससे यह ग़लतफ़हमी पैदा हो सकती है कि शायद उन्होंने किन्हीं गंभीर दार्शनिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया हो। दरअस्ल ऐसी कोई बात नहीं है। 'ग़ालिब' की दार्शनिकता जिस समय उड़ानें लेती थी उस समय बग़ैर किसी प्रचलित सिद्धांत का सहारा लिये अपने ही बल पर ज़मीन-आसमान के क़ुलाबे मिलाने लगती थी और अंतिम सत्य (Ultimate Reality) की गुत्थियाँ खोलने की कोशिश करने लगती थी। 'मीर' की दार्शनिकता पूर्णतः सूफ़ीवाद पर आश्रित थी।

'चकबस्त' न तो 'ग़ालिब' की भांति आज़ाद उड़ानें लेते थे, न किसी विशेष दार्शनिक सिद्धांत ही के पोषक थे। उनकी प्रवृत्ति समाजोन्मुख थी और उसके प्रकाशन के लिए उन्होंने नज़्मों का क्षेत्र चुना था। सार्वजनिक और सामाजिक प्रश्नों से अलग होकर जब वे कभी-कभी ग़ज़ल में जीवन-दर्शन की बातें करने लगते थे तो ऐसा मालूम होता था जैसे युद्ध-नीति सोचते-सोचते थक कर कोई सेनापति नदी के किनारे घूमने निकल जाय और पानी की लहरों को देखने लगे। इसीलिए यद्यपि 'चकबस्त' के दार्शनिक शेर हमें कोई ऐसा स्पष्ट नपा-तुला जीवन-दर्शन नहीं देते जो कि हमारी आत्मा को शांति और संतोष दे सके, या जिसे हम उनके बताये बग़ैर समझने में असमर्थ हों, तथापि उनकी सीधी-सादी मगर दिल से निकली हुई बातें सुनने वालों के दिल पर कुछ ऐसा असर कर जाती हैं कि उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। उदाहरणार्थ यह किसे नहीं मालूम कि संसार में जन्म और मृत्यु का चक्र चलता ही रहता है, लेकिन जब हम 'चकबस्त' के मुंह से यह सुनते हैं कि :

कहा गुंचे ने हँस कर वाह क्या नैरंगे-आलम है
वजूदे-गुल जिसे समझे हैं सब वो है अदम मेरा

तो इसका दूसरा ही असर होता है और मृत्यु हमें भयानक या प्रिय रूप में नहीं बल्कि एक साधारण वास्तविकता के रूप में दिखायी देने लगती है।

संक्षेप में 'चकबस्त' ने अपने मानव-प्रेम, समाज-प्रेम और जीवन के प्रति ईमानदारी के साथ अपने हृदय की कोमलतम

अनुभूतियों का योग देकर साहित्य के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। आज की बदली हुई स्थिति में हम उनके ठोस विचारों को भले ही न दोहरा सकें किंतु उन विचारों को प्रेरणा देने वाली भावना तो हमारे लिए अनुकरणीय होनी ही चाहिए।

चयन



सुबहे-वतन

प्रथम भाग

ख़ाके-हिन्द

ऐ ख़ाके-हिन्द ! तेरी अ़ज़मत[1] में क्या गुमां है
दरिया - ए - फ़ैज़े - क़ुदरत[2] तेरे लिए रवां[3] है
तेरी जबीं[4] से नूरे - हुस्ने - अज़ल[5] अयां[6] है
अल्ला रे ज़ेबो-ज़ीनत क्या औजो-इज़्ज़ो-शां[7] है

हर सुबह है ये ख़िदमत ख़ुरशीदे-पुर-ज़िया[8] की
किरनों से गूंधता है चोटी हिमालया की

इस ख़ाके-दिलनशीं[9] से चश्मे हुए वो जारी
चीनो-अरब में जिनसे होती थी आबयारी[10]
सारे जहां पे जब था वहशत[11] का अब्र[12] तारी[13]
चश्मो - चिराग़े - आलम थी सरज़मीं हमारी

शमए-अदब[14] न थी जब यूनां की अंजुमन में
ताबां[15] था मेहरे-दानिश[16] इस वादिए-कुहन[17] में

---

१. महानता २. प्रकृति के दान की नदी ३. बहती हुई ४. माथा ५. ईश्वरीय ज्योति ६. प्रकट ७. प्रतिष्ठा ८. चमकता सूर्य ९. प्यारी मिट्टी १०. सिंचाई ११. बर्बरता १२. बादल १३. घिरा १४. साहित्य-दीप १५. प्रकाशमान १६. विद्या का सूर्य १७. प्राचीन देश

गौतम ने आबरू दी इस मोबदे-कुहन[१] को
सरमद ने इस ज़मीं पर सदक़े किया वतन को
अकबर ने जामे-उल्फ़त बख़्शा इस अंजुमन को
सींचा लहू से अपने राना ने इस चमन को

सब सूरबीर अपने इस ख़ाक में निहां[२] हैं
टूटे हुए हैं खंडहर या उनकी हड्डियां हैं

दीवारो-दर से अब तक उनका असर अयां[३] है
अपनी रगों में अब तक उनका लहू रवां है
अब तक असर में डूबी नाक़ूस[४] की फ़ुग़ां[५] है
फ़िर्दौसे-गोश[६] अब तक कैफ़ीयते-अज़ां है

कश्मीर से अयां है जन्नत का रंग अब तक
शौकत से बह रहा है दरियाए-गंग अब तक

अगली सी ताज़गी है फूलों में और फलों में
करते हैं रक़्स[७] अब तक ताऊस[८] जंगलों में
अब तक वही कड़क है बिजली की बादलों में
पस्ती सी आ गयी है पर दिल के हौसलों में

गुल शमए-अंजुमन है गो अंजुमन वही है
हुब्बे-वतन नहीं है ख़ाके-वतन वही है

---

१. पुराने पूजास्थल २. छुपे ३. प्रकट ४. शंख ५. ध्वनि
६. कानों को प्यारी ७. नृत्य ८. मोर

बरसों से हो रहा है बरहम समां हमारा
दुनिया से मिट रहा है नामो-निशां हमारा
कुछ कम नहीं अजल[1] से ख़्वाबे-गिरां[2] हमारा
इक लाशे - बेकफ़न है हिन्दोस्तां हमारा
इल्मो - कमालो - ईमां बरबाद हो रहे हैं
ऐशो - तरब[3] के बंदे ग़फ़लत में सो रहे हैं

ऐ सूरे - हुब्बे - क़ौमी[4] ! इस ख़्वाब से जगा दे
भूला हुआ फ़साना कानों को फिर सुना दे
मुर्दा तबीयतों की अफ़सुर्दगी[5] मिटा दे
उठते हुए शरारे[6] इस राख से दिखा दे
हुब्बे - वतन समाए आँखों में नूर होकर
सर में ख़ुमार होकर दिल में सरूर होकर

शैदाए - बोस्तां[7] को सर्वो - समन[8] मुबारक
रंगीं तबीयतों को रंगे - सुख़न[9] मुबारक
बुलबुल को गुल मुबारक गुल को चमन मुबारक
हम बेकसों को अपना प्यारा वतन मुबारक
गुंचे हमारे दिल के इस बाग़ में खिलेंगे
इस ख़ाक से उठे हैं इस ख़ाक में मिलेंगे

---

१. मौत २. गहरी नींद ३. हंसी-खुशी ४. देश-भक्ति के भैरव राग ५. उदासी ६. चिंगारियां ७. बाग़ का प्रेमी ८. एक वृक्ष और फूल का नाम ९. सत्काव्य

है जूए - शीर[१] हमको नूरे - सहर[२] वतन का
आँखों की रोशनी है जल्वा इस अंजुमन का
है रश्के - मेहर[३] ज़र्रा इस मंज़िले - कुहन[४] का
तुलता है बर्गे-गुल[५] से कांटा भी इस चमन का

गर्दो - ग़ुबार यां का ख़िलअ़त है अपने तन को
मरकर भी चाहते हैं ख़ाके-वतन कफ़न को

फ़रियादे-क़ौम

है आज और ही कुछ सूरते - बयां मेरी
तड़प रही है दहन[६] में मेरे ज़बां मेरी
छिदेंगे क़ल्बो-जिगर[७] , तीर है फ़ुग़ां[८] मेरी
लहू के रंग में डूबी है दास्तां मेरी

मुबालिग़ा[९] नहीं, तमहीदे-शायराना[१०] नहीं
ग़रीब क़ौम का है मर्सिया, फ़साना नहीं

---

१. दूध की नहर २. सुबह की रोशनी ३. सूर्य को लजाने वाला ४. प्राचीन देश ५. फूल की पंखुड़ी ६. मुँह ७. हृदय ८. रुदन ९. अतिशयोक्ति १०. कवि की भूमिका

वतन से दूर तबाही में है वतन का जहाज़
हुआ है ज़ुल्म के परदे में हश्र[1] का आग़ाज़
सुनें तो मुल्क के हमदर्द, क़ौम के दमसाज़[2]
हवा के साथ ये आयी है दुख भरी आवाज़
वतन से दूर हैं, हम पर निगाह कर लेना
इधर भी आग लगी है, ज़रा ख़बर लेना

जो मिट रहे हैं वतन पर ये है सदा[3] उनकी
लहू पुकार रहा है ये है वफ़ा उनकी
बंधी है आलमे-तहज़ीब में हवा उनकी
ग़ज़ब की जा[4] है जो गर्दन झुकी ज़रा उनकी
तुम्हारे दिल में न उल्फ़त की हूक उठे अफ़सोस
वतन का क़ाफ़िला परदेस में लुटे अफ़सोस

टिरांसवाल के हाकिम वफ़ा-शुआर[5] नहीं
कुछ उनके क़ौल का दुनिया में एतबार नहीं
हमारी क़ौम पे अहसां का उनके बार नहीं
ये ज़ुल्म क्यों है, हम उनके गुनाहगार नहीं
अगर वो दौलते-बरतानिया[6] के प्यारे हैं
तो अहले-हिन्द उसी आसमां के तारे हैं

मगर जफ़ा से नहीं ज़ालिमों को मुतलक़[7] आर[8]
उजाड़ते हैं वो बस्ती जो थी कभी गुलज़ार
जहां ख़ुशी के तरानों का गर्म था बाज़ार
सुनायी देती है वां बेड़ियों की अब झंकार

---

१. क़यामत २. मित्र ३. आवाज़ ४. जगह ५. कृपालु ६. ब्रिटिश साम्राज्य ७. बिल्कुल ८. झिझक

किया है बंद मुसाफ़िर समझ के राहों को
पिन्हायी जाती है ज़ंजीर बेगुनाहों को

लुटे हैं यूं कि किसी की गिरह में दाम नहीं
नसीब रात को पड़ रहने का मुक़ाम नहीं
यतीम बच्चों के खाने का इन्तज़ाम नहीं
जो सुबह ख़ैर से गुज़री उमीदे-शाम नहीं

अगर जिये भी तो कपड़ा नहीं बदन के लिए
मरे तो लाश पड़ी रह गयी कफ़न के लिए

नसीब चैन नहीं भूख प्यास के मारे
हैं किस अज़ाब[1] में हिन्दोस्तान के प्यारे
तुम्हें तो ऐश के सामान जमअ़ हैं सारे
वहां बदन से रवां हैं लहू के फ़व्वारे

जो चुप रहें तो हवा क़ौम की बिगड़ती है
जो सर उठायें तो कोड़ों की मार पड़ती है

वतन से दूर भी हैं और ख़ानावीरां[2] भी
असीरे-यास[3] भी हैं और असीरे-ज़िन्दां[4] भी
तबाह हाल हैं हिन्दू भी और मुसलमां भी
हुए हैं नज्र मुसीबत के दीनो - ईमां भी

पढ़ी नमाज़ तो उजड़े घरों के सहरा[5] में
अगर नहाये तो अपने लहू की गंगा में

अगर दिलों में नहीं अब भी जोश ग़ैरत का
तो पढ़ दो फ़ातिहा क़ौमी विक़ारो-इज़्ज़त[6] का

---

१. मुसीबत २. जिनका घर बरबाद हो ३. निराश ४. बन्दी
५. रेगिस्तान ६. प्रतिष्ठा

वफ़ा को फूंक दो, मातम करो मुहब्बत का
जनाज़ा ले के चलो क़ौमो-दीनो-मिल्लत का
निशां मिटा दो उमंगों का और इरादों का
लहू में ग़र्क़[1] सफ़ीना[2] करो मुरादों का

कहां हैं मुल्क के सरताज, क़ौम के सरदार ?
पुकारते हैं मदद के लिए दरो-दीवार
वतन की ख़ाक से पैदा हैं जोश के आसार
ज़मीन हिलती है, उड़ता है ख़ून बन के ग़ुबार
जगह से अपनी है चित्तौड़ की ज़मीं सरकी
लरज़[3] रही है कई दिन से क़ब्र अकबर की

भंवर में क़ौम का बेड़ा है, हिन्दुओ हुशियार !
अंधेरी रात है, काली घटा है, और मंझधार
अगर पड़े रहे ग़फ़लत की नींद में सरशार
तो ज़ेरे-मौजे-फ़ना[4] होगा आबरू का मज़ार[5]
मिटेगी क़ौम ये, बेड़ा तमाम डूबेगा
जहां में भीषमो - अर्जुन का नाम डूबेगा

जिन्हें रुलाए न अब भी ये क़ौम की उफ़्ताद[6]
सियाह - क़ल्ब[7] वो हिन्दू हैं कंस की औलाद
मगर वो क्या हैं, किसीकी भी गर न हो इमदाद
असर दिखायेगी जादू का क़ौम की फ़रियाद
उठेंगे ख़ाक के तूदों[8] से दस्तगीर[9] अपने
ज़मीन हिन्द की उगलेगी सूरबीर अपने

१. डुबाना २. नाव ३. कांप ४. मिटाने वाली लहरों के नीचे ५. क़ब्र ६. मुसीबत ७. पापी ८. ढेरों ९. सहारे

दिखादो जौहरे - इस्लाम, ऐ मुसलमानो !
विक़ारे-क़ौम[1] गया, क़ौम के निगहबानो !
सतून[2] मुल्क के हो, क़द्रे - क़ौमियत जानो
जफ़ा वतन पे है, फ़र्ज़े-वफ़ा को पहचानो
नबी के खुल्क़ो-मुरौवत[3] के विरसादार[4] हो तुम
अरब की शाने-हमीयत की यादगार हो तुम

करो ख़याल कुछ इस्लाफ़[6] की हमीयत का
दिया था दुश्मने-क़ातिल को जाम शरबत का
मुआमला है यहां भाइयों की इज़्ज़त का
ये फ़र्ज़े - ऐन है, सौदा नहीं मुरौवत का
अगर न अब भी हो इस्लाम का जिगर पानी
'हज़ार खंदाए-कुफ्र अस्त बर मुसलमानी'[7]

अगर न क़ौम के इस वक़्त भी तुम आए काम
नसीब होगा न मरने पे भी तुम्हें आराम
यही कहेगा ज़माना कि था बराए - नाम
वो धर्म हिन्दुओं का वह हमीयते - इस्लाम[8]
ज़रा असर न हुआ क़ौम के हबीबों[9] पर
वतन से दूर छुरी चल गई ग़रीबों पर

रहेगा माल न हमराह जायेगी दौलत
गई तो क़ब्र तलक साथ जायेगी ज़िल्लत

---

१. देश की प्रतिष्ठा २. स्तम्भ ३. प्रेम ४. उत्तराधिकारी ५. वीरता ६. पूर्वज ७. 'कुफ्र हज़ार बार इस्लाम पर हंसेगा' ८. इस्लाम की शान ९. प्रेमियों

करो जो एक रुपये से भी क़ौम की ख़िदमत
तुम्हारी ज़ात से हो इक यतीम को राहत
मिले हिजाब[1] की चादर किसी की अ़समत[2] को
कफ़न नसीब हो शायद किसी की मय्यत[3] को

जो दब के बैठ रहे सर उठाग्रोगे फिर क्या
उदूए - क़ौम को नीचा दिखाग्रोगे फिर क्या
जफ़ा-ग्रो-जौर की ज़िल्लत मिटाग्रोगे फिर क्या
तुम ग्रपने बच्चों को क़िस्से सुनाग्रोगे फिर क्या
रहेगा क़ौल यही उनसे उनकी माग्रों का
लहू रगों में तुम्हारी है बेहयाग्रों का

मिटा जो नाम तो दौलत की जुस्तजू क्या है
निसार[4] हो न वतन पर तो ग्राबरू क्या है
लगा दे ग्राग न दिल में तो ग्रारज़ू क्या है
न जोश खाये जो ग़ैरत[5] से वह लहू क्या है
फ़िदा वतन पे जो हो, ग्रादमी दिलेर है वह
जो यह नहीं तो फ़क़त हड्डियों का ढेर है वह

१. परदा २. सतीत्व ३. लाश ४. न्योछावर ५. लाज

हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

(बच्चों के लिए)

ये हिन्दोस्तां है हमारा वतन
मुहब्बत की आँखों का तारा वतन
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

वो इसके दरख़्तों की तय्यारियाँ
वो फल-फूल, पौदे, वो फुलवारियाँ
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

हवा में दरख़्तों का वह झूमना
वो पत्तों का फूलों का मुंह चूमना
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

वो सावन में काली घटा की बहार
वो बरसात की हल्की-हल्की फुहार
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

वो बाग़ों में कोयल, वो जंगल के मोर
वो गंगा की लहरें, वो जमुना का ज़ोर
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

इसी से है इस ज़िन्दगी की बहार
वतन की मुहब्बत हो या मां का प्यार
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

वतन को हम वतन हमको मुबारक

ये प्यारी अंजुमन[1] हमको मुबारक
ये उल्फ़त का चमन हमको मुबारक—वतन को हम०
यहां की ख़ाक[2] हमको कीमिया[3] है
ये सोने से भी क़ीमत में सिवा[4] है—वतन को हम०
जो चिड़ियां सुबह को गाती हैं अक्सर
इसी का राग है उनकी ज़बां पर—वतन को हम०
वो सावन के महीनों की घटाएं
वो कोयल और पपीहे की सदाएं[5]—वतन को हम०
वो इक मस्ती का आलम बादलों में
वो फूलों का महकना जंगलों में—वतन को हम०
वो चश्मे[6] और वह अमृत सा पानी
वो गंगा और जमुना की रवानी—वतन को हम०
दरख़्तों पर वो चिड़ियों का चहकना
वो बेले और चमेली का महकना—वतन को हम०
इसी की ख़ाक से लेते हैं महसूल
यही देता है ग़ल्ला और फल-फूल—वतन को हम०
वतन का जिन बुज़ुर्गों से हुआ नाम
इसी मिट्टी में वो करते हैं आराम
—वतन को हम वतन हमको मुबारक

---

१. सभा २. मिट्टी ३. अकसीर ४. अधिक ५. आवाज़ें ६. निर्झर

द्वितीय भाग

फूल माला

(क़ौम की लड़कियों से ख़िताब)

रविशे-ख़ाम[१] पे मर्दों की न जाना हर्गिज़
दाग़ तालीम में अपनी न लगाना हर्गिज़
नाम रक्खा है नुमायश का तरक़्क़ी व रिफ़ार्म
तुम इस अंदाज़ के धोखे में न आना हर्गिज़
रंग है जिनमें मगर बूए-वफ़ा कुछ भी नहीं
ऐसे फूलों से न घर अपना सजाना हर्गिज़
नक़्ल योरोप की मुनासिब है मगर याद रहे
ख़ाक में ग़ैरते-क़ौमी[२] न मिलाना हर्गिज़
ख़ुद जो करते हैं ज़माने की रविश को बदनाम
साथ देता नहीं ऐसों का ज़माना हर्गिज़
ख़ुद-परस्ती[३] को लक़ब[४] देते हैं आज़ादी का
ऐसे इख़लाक़[५] पे ईमान न लाना हर्गिज़
रंगो-रोग़न तुम्हें योरोप का मुबारक, लेकिन
क़ौम का नक़्श[६] न चेहरे से मिटाना हर्गिज़
जो बनाते हैं नुमायश का खिलौना तुमको
उनकी ख़ातिर से ये ज़िल्लत न उठाना हर्गिज़

१. ग़लत चलन २. देश की लाज ३. स्वार्थ ४. दूसरा नाम
५. नैतिकता ६. चिह्न

रुख़[1] से परदे को उठाया तो बहुत ख़ूब किया
परदाए-शर्म को दिल से न उठाना हर्गिज़
तुम को क़ुदरत ने जो बख़्शा है हया का ज़ेवर
मोल इसका नहीं क़ारूं[2] का ख़ज़ाना हर्गिज़
दिल तुम्हारा है वफ़ाओं की परस्तिश[3] के लिए
इस मुहब्बत के शिवाले को न ढाना हर्गिज़
पूजने के लिए मंदिर है जो आज़ादी का
उसको तफ़रीह का मरकज़[4] न बनाना हर्गिज़
नक़्द[5] इख़लाक़ का हम नल की तरह हार चुके
तुम हो दमयन्ती, ये दौलत न लुटाना हर्गिज़
ख़ाक में दफ़्न हैं मज़हब के पुराने पाखंड
तुम ये सोते हुए फ़ित्ने न जगाना हर्गिज़
अपने बच्चों की ख़बर क़ौम के मर्दों को नहीं
ये हैं मासूम, इन्हें भूल न जाना हर्गिज़
इनकी तालीम का मकतब है तुम्हारा ज़ानू[6]
पास मर्दों के नहीं इनका ठिकाना हर्गिज़
काग़ज़ी फूल विलायत के दिखाकर इनको
देस के बाग़ से नफ़रत न दिलाना हर्गिज़
नग़माए-क़ौम[7] की लै जिसमें समा ही न सके
राग इनको कोई ऐसा न सिखाना हर्गिज़

---

१. चेहरा २. एक बहुत अमीर आदमी ३. पूजा ४. केन्द्र
५. धन ६. घुटने ७. देश का राग

परवरिश क़ौम की दामन से तुम्हारे होगी
याद इस फ़र्ज़ की दिल से न भुलाना हर्गिज़
गो बुज़ुर्गों में तुम्हारे न हो इस वक़्त का रंग
इन ज़ईफ़ों[1] को न हँस-हँस के रुलाना हर्गिज़
होगा परलय जो गिरा आँख से इनके आंसू
बचपने से न ये तूफ़ान उठाना हर्गिज़
हम तुम्हें भूल गये उसकी सज़ा पाते हैं
तुम ज़रा अपने तईं भूल न जाना हर्गिज़
किसके दिल में है वफ़ा[2] , किसकी ज़बां में तासीर
न सुना है न सुनोगी ये फ़साना हर्गिज़

१. बूढ़ों २. प्रेम

दर्दे-दिल

दर्द है दिल के लिए और दिल इंसां के लिए
ताज़गी बर्गो-समर[1] की चमनिस्तां के लिए
साज़े-आहंगे-जुनूं[2] तारे-रगे-जां[3] के लिए
बेख़ुदी[4] शौक़[5] की मुझ बे-सरो-सामां[6] के लिए
क्या कहूं कौन हवा सर में भरी रहती है
बे पिये आठ पहर बेख़बरी रहती है

न हूं शायर, न वली हूं, न हूं एजाज़-बयां[7]
बज़्मे-क़ुदरत में हूं तसवीर की सूरत हैरां
दिल में इक रंग है लफ़्ज़ों से जो होता है अयां[8]
लै की मोहताज नहीं है मेरी फ़रियादो-फ़ुग़ां
शौक़े-शोहरत हवसे-गर्मिए-बाज़ार[9] नहीं
दिल वो यूसुफ़ है जिसे फ़िक्रे-ख़रीदार नहीं

और होंगे जिन्हें रहता है मुक़द्दर से गिला[10]
और होंगे जिन्हें मिलता नहीं मेहनत का सिला[11]
मैंने जो ग़ैब[12] की आवाज़ से मांगा वो मिला
जो अक़ीदा[13] था मेरे दिल का हिलाये न हिला
क्यों डराते हैं अबस[14] गब्रो-मुसलमां[15] मुझको
क्या मिटायेगी भला गर्दिशे-दौरां[16] मुझको

---

१. फल, पत्ते २. उन्माद का वाद्य ३. मर्म तंतु ४. आत्म-विस्मृति ५. प्रेम ६. निर्धन ७. सुकवि ८. प्रकट ९. ख्याति की चाह १०. शिकायत ११. पुरस्कार १२. ईश्वरीय १३. विश्वास १४. व्यर्थ १५. हिन्दू-मुसलमान १६. संसार-चक्र

क्या ज़माने पे खुले बेख़बरी का मेरी राज़
तायरे-फ़िक्र[1] में पैदा तो हो इतनी परवाज़[2]
क्यों तबीयत को न हो बेख़ुदीए-शौक़[3] पे नाज़[4]
हज़रते-'अब्र'[5] के क़दमों पे है यह फ़र्क़-नियाज़[6]

फ़ख्र है मुझको इसी दर से शरफ़[7] पाने का
मैं शराबी हूं इसी रिंद[8] के मैख़ाने का

दिल मेरा दौलते-दुनिया[9] का तलबगार नहीं
ब-ख़ुदा[10] ख़ाक-नशीनी[11] से मुझे आर[12] नहीं
मस्त हूं हुब्बे-वतन से, कोई मैख़्वार[13] नहीं
मुझको मग़रिब की नुमायश से सरोकार नहीं

अपने ही दिल का प्याला पिये मदहोश हूं मैं
जूठी पीता नहीं मग़रिब की, वो मैनोश[14] हूं मैं

क़ौम के दर्द से हूं सोज़े-वफ़ा की तसवीर
मेरी रग-रग से है पैदा तपे-ग़म[15] की तासीर
है मगर आज नज़र में वो बहारे-दिलगीर
कर लिया दिल को फ़रिश्तों ने तरब[16] के तस्ख़ीर[17]

यह नसीमे-सहरी[18] आज ख़बर लायी है
साल गुज़रा मेरे गुलशन में बहार आयी है

१. कल्पना का पक्षी २. उड़ान ३. प्रेम की आत्म-विस्मृति ४. गर्व ५. पं० बिशन नरायन दर 'अब्र' ६. प्रेमी का माथा ७. सन्मान ८. शराबी ९. सांसारिक सुख १०. ईश्वर की क़सम ११. फ़क़ीरी १२. झिझक १३. शराबी १४. शराबी १५. दुःख-ताप १६. खुशी १७. वश में १८. सुबह की हवा

नौजवानों से ख़िताब

हां जवानाने-वतन ! ख़्वाब से बेदार हो अब
सो चुके, रात भी आख़िर हुई, हुशियार हो अब
सहरे - नूरे - वफ़ा[1] के लिए तय्यार हो अब
दर्दे-दिल कुछ मुझे कहना है, ख़बरदार हो अब

बेख़ुदी[2] दिल की है तसवीरे - बयां मेरी है
मर्सिया क़ौम का है और ज़बां मेरी है

नुक्ताचीनी[3] से ग़रज़ है, न दिल-आज़ारी[4] है
सिर्फ़ मंज़ूरे - नज़र[5] ख़्वाब से बेदारी है
ग़फ़लते-ऐश[6] दिलों पर जो यहाँ तारी[7] है
बेख़ुदी कहते हैं इसको कि ये हुशियारी है ?

क्या किये जाते हो क्या मुंह से कहे जाते हो ?
कुछ ख़बर है तुम्हें किस सिम्त बहे जाते हो ?

चमने - उम्र हमेशा न रहेगा शादाब
ख़ुम[8] में बाक़ी न रहेगी ये जवानी की शराब
नश्शाए-इल्म में हर वक़्त रहो तुम ग़रक़ाब[9]
शाने - तालीम यही है यही तह्ज़ीबे - शबाब[10]

ले उड़े दिल को तबीयत की रवानी वह है
बे पिये नश्शा रहे जिसमें, जवानी वह है

१. प्रेम की सुबह २. आत्म-विस्मृति ३. आलोचना ४. दिल दुखाना ५. लक्षित ६. सुख की नींद ७. छाई ८. मटका ९. डूबे हुए १०. जवानी की सभ्यता

मस्त कर देती है ऐसा ये शराबे - सरजोश
नज़र ग्राती है मए - हुस्न[1] से दुनिया मदहोश
सैरे-जन्नत में रहा करते हैं चश्मो-लबो-गोश[2]
मुझसे कहता था जवानी में मेरा बादा-फ़रोश[3]
हर घड़ी ग्रालमे - बाला[4] पे नज़र रहती है
कहीं इंसान को दुनिया की ख़बर रहती है

नश्शाए-इल्म में तुममें से नहीं कोई भी चूर
दख्ल रहता है तबीयत में तग्र्ल्ली[5] को ज़रूर
हो गया है जो ज़रा चार किताबों पे उबूर[6]
तो ग़ज़ब की हमादानी[7] है, क़यामत का ग़रूर
शान ग्ररस्तू की भी, फ़िरग्रौन का सामान भी है
वही घर मिश्र भी है ग्रौर वही यूनान भी है

इल्मो-इख़लाक़ के दामन पे तुम्हारे हैं ये दाग़
जो बुज़ुर्गों ने लगाया था उजड़ता है वो बाग़
तुमको ग्रल्लाह ने बख्शे हैं वो दिल ग्रौर दिमाग़
जिससे रोशन हो ज़माने की तरक़्क़ी का चिराग़
इक ज़रा जज़्बाए-इख़लाक़[8] को ग्राला करदो
क़ौमे-मरहूम[9] की तुरबत[10] पे उजाला करदो

१. सौंदर्य-मदिरा २. ग्रांख, होंट ग्रौर कान ३. शराब बेचने वाला ४. ऊंचाई ५. घमंड ६. ग्रधिकार ७. सर्वज्ञता ८. नैतिकता ९. मरी हुई जाति १०. क़ब्र

तुम मदद के नहीं मोहताज ये मैंने माना
हो मगर फ़िक्र से बच्चों की न यूं बेगाना
बारे-अहसाँ[1] से सुबकदोश[2] हो गर हो दाना
एक दिन क़ौम के आगे न पड़े शरमाना
तुमको बच्चों का बड़ा फ़र्ज़ अदा करना है
है तो ईमान की यह क़र्ज़ अदा करना है

इन्हीं बच्चों की मुहब्बत हुई है दामनगीर[3]
आपकी समअ़-ख़राशी[4] की जो की यह तदबीर
अपने दर्दे - दिले - नाशाद[5] की है यह तक़सीर
अश्के-हसरत[6] से किया है इसे दिल ने तहरीर
चाहे मजज़ूब[7] की बड़ चाहे नसीहत समझो
यह हमारे दिले-मुर्दा की वसीयत समझो

---

१. अहसान का बोझ २. निवृत्त ३. पकड़े हुए ४. कान फोड़ना
५. हृदय का दुख ६. दुख के आंसू ७. पागल

नालाए-यास

क्या कहें किससे कहें हम आज क्या कहने को हैं
आख़िरी अफ़सानाए - शौक़े - वफ़ा[1] कहने को हैं
जिन उमीदों की लड़कपन में हुई थी इब्तदा[2]
आज उनकी इन्तहा[3] का माजरा कहने को हैं
बेख़बर अब भी नहीं हम क़ौम के दुख-दर्द से
पहले हिम्मत थी दवा की अब दुआ कहने को हैं
क्या कहें क्या दौरे-आख़िर में सितम देखा किये
बरहमी[4] बढ़ती गयी महफ़िल को हम देखा किये

वह भी क्या आलम था जब दुनिया से दिल आज़ाद था
और सब भूले थे, इक क़िस्सा वफ़ा का याद था
क़ौम का सौदा[5], वफ़ा का शौक़, ख़िदमत की उमंग
बस इन्हीं दो-तीन के सदक़े में दिल आबाद था
कोफ़्त थी हमको अगर गुमराह था बच्चा कोई
हम भी ख़ुश थे गर किसी मासूम का दिल शाद था
थी इसी रंगे-मुहब्बत से उमीदों की बहार
कैसे कैसे फूल थे कैसा चमन आबाद था
हम ये बरसों की मुहब्बत भूलने वाले नहीं
इतने भाई एक मां की गोद ने पाले नहीं

१. प्रेम-कहानी २. आरम्भ ३. अन्त ४. बिखरना ५. उन्माद

हैफ़ ! यह मजमूअ़ए-सोहबत[1] परीशां[2] हो गया
बस्तियों में फूल पहुंचे, बाग़ वीरां हो गया
मिल गया अहले-चमन को फिर भी खिदमत का सिला[3]
क़ौम का दामन किसी गुलचीं[4] का दामां हो गया
रंगे - तासीरे - चमन बिखरे हुए फूलों में है
क्या हुआ खाली अगर सहने - गुलिस्तां हो गया
हम जहां हैं अंजुमन की वज़अ़ अपने साथ है
जिस जगह पहुंचे वहीं आलम नुमायां[5] हो गया
गुंचाए - अहबाब[6] की तसवीर है सीने के साथ
दिल की हर बस्ती में एक महफ़िल का सामां हो गया
नश्शे से ग़ाफ़िल हमारे रिन्द[7] और साक़ी नहीं
गो कि महफ़िल उठ गई जामो-सुबू[8] बाक़ी नहीं

गो कि अहले - बाग़बां जंजाल से छूटे नहीं
पर अभी इस बाग़ के दीवारो - दर टूटे नहीं
इन्तज़ारे - शौक़ में दर पर खड़ी है नौबहार
पेशवाई के लिए फल-फूल गुल-बूटे नहीं
यास[9] कहती है कि जमने का नहीं रंगे-चमन
आरज़ू कहती है अगला सिलसिला टूटे नहीं
आप अगर पैग़ाम दें बादे - बहारी[10] के लिए
आयेंगे अहले-चमन फिर आबयारी के[11] लिए

---

१. जमाव २. बिखरा हुआ ३. इनाम ४. माली ५. प्रकट ६. मित्र रूपी कली ७. शराबी ८. प्याले, सुराही ९. निराशा १०. वसंत की वायु ११. सिंचाई

कृष्ण कन्हैया

आज की रात का दुनिया के लिए क्या है पयाम
हुस्ने-क़ुदरत[१] का सरे-शाम से है जल्वाए-आ़म[२]
नूर बरसाते हैं तारों के छलकते हुए जाम
बन गया साज़े-तरब हस्तिए-आ़लम[४] का निज़ाम[५]
फ़र्शे-राहत[६] पे अगर आंख झपक जाती है
बांसुरी की मेरे कानों में सदा आती है

बे-हिजाबी[७] की उरूसाने-चमन[८] में है अदा
गुल का नकहत[९] से इशारा है कि परदा कैसा
दिल में पैवस्त हुई जाती है मोरों की नवा[१०]
हुन बरसने को है कहती है ये पूरब की हवा
पेशवाई के लिए ख़ल्क़े-ख़ुदा[११] उट्ठी है
आज जमुना के किनारे से हवा उट्ठी है

शबे-तारीक[१२] के क़ब्ज़े में है ऐवाने-फ़लक[१३]
झपकी जाती है अंधेरे में सितारों की पलक
वह हवा है कि उड़े जाते हैं फ़ानूस तलक
नज़र आती नहीं बस्ती में चिराग़ों की झलक
सिर्फ़ जुगनू है जो दीवाना-सिफ़त[१४] फिरता है
शमअ़ लेकर कभी उठता है कभी गिरता है

१. प्रकृति की छटा २. प्रदर्शन ३. खुशी का साज ४. संसार ५. व्यवस्था ६. सुख-शय्या ७. मुंह खोलना ८. बाग की वधुएं (फूल) ९. सुगन्ध १०. आवाज ११. दुनिया १२. अंधेरी रात १३. आकाश १४. पागल की भांति

सनसनाती हुई आती है अंधेरे में हवा
शजरो-शाख़[1] के नग़मे[2] से है मामूर[3] फ़ज़ा
बिजलियां कौंदती हैं लाख गरजती हैं घटा
नै[4] के बाहर नहीं होती है पपीहे की सदा[5]

दर्द के नाम से नेमत इसे हाथ आयी है
एक ही राग का दुनिया में ये शैदाई है

छा गया अब्र[6] बरसने को हैं मेंह के झाले
आप ही आप हुए जाते हैं दिल मतवाले
आंख कहती है ये बादल नहीं काले-काले
बाल खोले हुए हैं साँवली सूरत वाले

कश्तिए-फ़िक्र बही जाती है जमुना की तरफ़
दिल मेरा खींच रहा है मुझे मथुरा की तरफ़

राह तारीक[7] है और सर पे गरज बादल की
दूंगड़ा मेंह का है बूंदें नहीं हल्की-हल्की
शोख़ो-तर्रारो-हसीं[8] छोकरियां गोकल की
चली आती हैं सुराही लिये जमुना-जल की

दिल लड़कपन की उमंगों पे मचल जाता है
खिलखिला पड़ती हैं जब पांव फिसल जाता है

---

१. वृक्ष और शाखाएं २. गान ३. भरी हुई ४. लय ५. आवाज़
६. बादल ७. अंधेरी ८. चंचल

यह ख़ुशी है कि मनाना है कन्हैया का जनम
दिल में अरमान हज़ारों हैं मगर वक़्त है कम
नहीं मोने में समाता ये है दिल का आ़लम
आंख पड़ती है कहीं और कहीं पड़ता है क़दम

एक को एक की सूरत जो नज़र आती है
मुस्कुरा देती हैं जब, बर्क़[१] चमक जाती है

आज सोती हुई दुनिया की है क़िस्मत बेदार[२]
साल भर बाद वो रात आयी है दिन जिस पे निसार
यही बिजली थी, यही अब्र, यही जोशे-बहार
जब कन्हैया के जनम से हुई रोशन शबे-तार[३]

क़ैदख़ाने की सियाही में वो तारा चमका
जिससे इंसान की हस्ती का सितारा चमका

था जो दुनिया को रहे-रास्त[४] पे लाना मंज़ूर
जल्वाए-हक़[५] ने किया क़ालिबे-ख़ाकी[६] में ज़हूर[७]
जोशे-रहमत से ग़नी[८] फ़ैज़ो-करम[९] से मामूर
ज़ुल्मते-जहल[१०] मिटाने को बढ़ा चश्माए-नूर[११]

परदाए-ग़ैब[१२] से मथुरा के चमन तक पहुंचा
बढ़ के मथुरा से कुरुक्षेत्र के रन तक पहुंचा

---

१. बिजली २. जागृत ३. अंधेरी रात ४. सुमार्ग ५. दैवी प्रकाश ६. भौतिक शरीर ७. प्रकट होना ८. धनी ९. कृपा की अधिकता १०. अज्ञान-अन्धकार ११. प्रकाश का स्रोत १२. स्वर्ग

देखकर जंग के तूफ़ान में अर्जुन को उदास
यूँ दिया वाज़[1] कि हुशियार हो ऐ कुश्ताए-यास[2] !
रूहो-क़ालिब[3] की जुदाई पे अबस[4] है वसवास[5]
जो मुसाफ़िर है वो मंज़िल पे बदलता है लिबास

रूह दुनिया की मुसाफ़िर है अजल[6] मंज़िल है
इस सफ़र में जो खटकता है वो कांटा दिल है

साफ़ नीयत है तो बेकार है अंजाम का डर
पाक बंदे जो हैं रखते हैं फ़क़त हक़[7] पे नज़र
खुद रियाज़त[8] को समझते हैं रियाज़त का समर[9]
फल के लालच में लगाते नहीं नेकी का शजर[10]

उनकी आंखों में वही दाग़े-वफ़ा प्यारे हैं
खुद-ग़रज़ के लिए जो आग के अंगारे हैं

फूल माया के जो खिलते हैं लुभाने के लिए
सांप बिच्छू हैं मुसाफ़िर के सताने के लिए
सिलसिला हस्तीए-फ़ानी[11] का मिटाने के लिए
बज़्मे-आलम से न जा लौट के आने के लिए

तेरी हस्ती का जो है राग भुला दे उसको
परदाए-साज़े-हक़ीक़त[12] में छुपा दे उसको

---

१. उपदेश २. निराशा का मारा ३. देह और आत्मा ४. व्यर्थ ५. झिझक ६. मौत ७. ईश्वर ८. तपस्या ९. फल १०. वृक्ष ११. नश्वर जीवन १२. सत्य रूपी बाजे का परदा

किस लिए ख़ाक के पुतलों के लिए रोता है
देखने को है खुली आंख, मगर सोता है
कुछ ख़बर है तुझे क्यों जान अ़बस खोता है
कौन करता है फ़ना कौन फ़ना होता है

दोस्त दुश्मन का मददगार वही जंग में है
एक सूरतगरे-हस्ती[1] है जो हर रंग में है

वही बिस्मिल[2] है वही जौहरे-शमशीर भी है
शोलाए-शमअ़[3] वही है वही गुलगीर[4] भी है
ख़ुद मुसव्विर[5] भी वही है वही तसवीर भी है
वही हाकिम, वही क़ैदी, वही ज़ंजीर भी है

जौहरी भी है वही जौहरे-आ़ली भी वही
फूल भी है वही इस बाग़ का माली भी वही

तेरी आंखों से अगर दूर हो माया का नक़ाब
देख फिर क्या नज़र आते हैं अ़ज़ीज़[6] और अहबाब[7]
बेवफ़ाओं की मुरव्वत में न कर उम्र ख़राब
हक़-परस्तों[8] की अमानत[9] है तेरा ज़ोरे-शबाब

धर्म पर जो न फ़िदा हो वो जवानी क्या है
दूध की धार है, तलवार का पानी क्या है

१. जीवन का गढ़ने वाला २. घायल ३. दीपक की लौ ४. बत्ती काटने की कैंची ५. चित्रकार ६. प्रियजन ७. मित्र ८. सत्य-प्रेमियों ९. धरोहर

अब न अर्जुन है न वह ज्ञान का दरिया बाक़ी
न वो आंखें हैं न वह नूर का जलवा बाक़ी
दिल लुभाने को है दुनिया का तमाशा बाक़ी
दर्द बाक़ी है न है दर्द का शैदा बाक़ी

बांसुरी ले के नया राग सुना दे कोई
सो रहा है दिले-मायूस, जगा दे कोई

फिर हो दुनिया में किसी हस्तीए-कामिल[1] का ज़हूर[2]
दिल में जिसके हो समाया हुआ ख़िदमत का सरूर
जज़्बाए-ख़ैर[3] की हो जिसको परस्तिश[4] मंज़ूर
बादाए-शौक़[5] से हों जिसकी निगाहें मख़मूर[6]

दिल को तसख़ीर[7] करे अंजुमन-आरा[8] होकर
हो न दुनिया से ख़फ़ा दीन का प्यारा होकर

---

१. पूर्ण पुरुष २. आविर्भाव ३. धर्म ४. पूजा ५. प्रेम-मदिरा
६. मस्त ७. वश में ८. सुशोभित

क़ौमी मुसद्दस

(हिन्दू विश्वविद्यालय के सम्बंध में)

इलाही ! कौन फ़रिश्ते हैं ये गदाए-वतन[१]
सफ़ाए-क़ल्ब[२] से जिनके ये बज़्म[३] है रौशन
झुकी हुई है सभी की लिहाज़ से गर्दन
हर इक ज़बां पे हैं ताज़ीम[४] और अदब के सुख़न[५]
सफ़ें[६] खड़ी हैं जवानों की और पीरों[७] की
ख़ुदा की शान है फेरी है किन फ़क़ीरों की

फ़क़ीर इल्म के हैं इनकी दास्तां सुन लो
पयाम क़ौम का, दुख-दर्द का बयां सुन लो
ये दिन वो दिन है जो है यादगार, हां सुन लो
है आज ग़ैरते-क़ौमी का इम्तहां सुन लो
यही है वक़्त अमीरों की पेशवाई का
फ़क़ीर आये हैं कासा[८] लिये गदाई[९] का

जो अपने वास्ते मांगें ये वो फ़क़ीर नहीं
तमअ़[१०] में दौलते-दुनिया की ये असीर[११] नहीं
अमीर दिल के हैं ज़ाहिर के ये अमीर नहीं
वो आदमी नहीं जो इनका दस्तगीर[१२] नहीं
तमाम दौलते-ज़ाती[१३] लुटा के बैठे हैं
तुम्हारे वास्ते धूनी रमा के बैठे हैं

---

१. देश के भिखारी २. निर्मल हृदय ३. सभा ४. आदर ५. बातें ६. कतारें ७. बूढ़ों ८. भिक्षापात्र ९. भीख १०. लालच ११. कैद १२. सहायक १३. निजी सम्पत्ति

सवाल इनका है तालीम का बने मंदिर
कलस हो जिसका हिमाला से औज[1] में बरतर[2]
इसी उमीद पे ये घूमते हैं शामो-सहर[3]
सदा[4] लगाते हैं राहे-ख़ुदा में यह कह कर

वो ख़ुदग़रज़ हैं जो दौलत पे जान देते हैं
वही हैं मर्द जो विद्या का दान देते हैं

सवाल रद न हो इनका, ये शर्त है तदबीर
इसी से पायेंगे ईमानो-आबरू तौक़ीर[5]
ये है तरक़्क़िए-क़ौमी के वास्ते अक्सीर
बहे उलूम[6] की गंगा, पियें अमीरो-फ़क़ीर

विक़ारे-क़ौम[7] बढ़े, दूर बेज़री[8] हो जाय
उजड़ गयी है जो खेती जो फिर हरी हो जाय

जो हो रहा है ज़माने में है तुम्हें मालूम
कि हो गये हैं गिरां[9] किस क़दर फ़नूनो-उलूम[10]
तुम्हारी क़ौम से दौलत हुई है यूं मादूम[11]
कि अब तरसते हैं पढ़ने को सैकड़ों मासूम[12]

वो ख़ुद तरसते हैं मां-बाप उनके रोते हैं
तुम्हारी क़ौम के बच्चे तबाह होते हैं

---

१. ऊंचाई २. ऊंचा ३. सुबह-शाम ४. आवाज़ ५. प्रतिष्ठा ६. विद्याओं ७. देश की प्रतिष्ठा ८. निर्धनता ९. महंगी १०. विद्याएं ११. लोप १२. भोले-भाले

ये बेगुनाह उसी क़ौम के हैं लख़्ते-जिगर
कि जिसने तुमको भी पाला है सूरते-मादर
जिगर पे क़ौम के इफ़लास[1] का चले ख़ंजर
ग़ज़ब ख़ुदा का तुम्हारे दिलों पे हो न असर

उसी से बेख़बरी जिसके दम पे जीते हो !
उसे रुलाते हो जिस माँ का दूध पीते हो !

ये क़हत[2] क्या है ? ये ताऊन क्या है ? क्या है वबा ?
तुम्हारी क़ौम पे नाज़िल[3] हुआ है क़हरे-ख़ुदा[4]
जो राहे-रास्त[5] से होती है कोई क़ौम जुदा
इसी तरह उसे मिलती है एक रोज़ सज़ा

इसी तरह से हवा क़ौम की बिगड़ती है
इसी तरह से ग़रीबों की आह पड़ती है

गुनाह क़ौम के धुल जायं, अब वो काम करो
मिटे कलंक का टीका वो फ़ैज़[6] आम करो
निफ़ाक़ो-जहल[7] को बस दूर से सलाम करो
कुछ अपनी क़ौम के बच्चों का इंतज़ाम करो

ये काम होके रहे चाहे जां रहे न रहे
ज़मीं रहे न रहे आसमां रहे न रहे

---

१. गरीबी २. दुर्भिक्ष ३. उतरा ४. ईश्वरीय कोप ५. सुमार्ग ६. शुभ कार्य ७. अज्ञान और फूट

ये कारे-ख़ैर[1] में कोशिश, ये क़ौम का दरबार
लगा दो आज तो चांदी के हर तरफ़ अम्बार
ये सब कहें कि है ज़िन्दा ये क़ौमे-ग़ैरतदार
है इसके दिल में बुज़ुर्गों की आबरू का विक़ार[2]
सरों में हुब्बे-वतन का जुनून बाक़ी है
रगों में भीषमो-अर्जुन का ख़ून बाक़ी है

मिसेज़ बेसेंट के अहसान की तुम्हें है ख़बर ?
किया निसार बुढ़ापा तुम्हारे बच्चों पर
शरीक वो भी हैं इस कारे-ख़ैर के अंदर
न आँख उनकी हो नीची, रहे ये मद्दे-नज़र[3]
मिटे न बात कहीं तुम पे मिटने वालों की
तुम्हारे हाथ है शर्म उन सफ़ेद बालों की

तुम्हारे वास्ते लाज़िम है मालवी का भी पास
कि जिसकी ज़ात से अटकी हुई है क़ौम की आस
लिया ग़रीब ने घरबार छोड़कर बनवास
जो यह नहीं है तो कहते हैं फिर किसे संन्यास
तमाम उम्र कटी एक ही क़रीने पर
गिराया अपना लहू क़ौम के पसीने पर

१. सत्कार्य २. प्रतिष्ठा ३. दृष्टिगत

इसी के हाथ में है क़ौम का संवर जाना
तुम्हारी डूबती कश्ती का फिर उभर जाना
जो तुमने अब भी न दुनिया में काम कर जाना
तो यह समझ लो कि बेहतर है इससे मर जाना

ग़ज़ब हुआ जो दिल इसका भी तुमसे ऊब गया
गिरा इस आंख से आँसू तो नाम डूब गया

घटाएं जहल[1] की छायी हुई हैं तीरा-ओ-तार[2]
ये आरज़ू है कि तालीम से हो बेड़ा पार
मगर जो ख़्वाब से अब भी न तुम हुए बेदार[3]
तो जान लो कि है इस क़ौम की चिता तय्यार

मिटेगा दीन भी और आबरू भी जायेगी
तुम्हारे नाम से दुनिया को शर्म आयेगी

जो इस तरह हुआ दुनिया में आबरू का ज़वाल[4]
तो काम आयेगा उक़्बा[5] में क्या ये दौलतो-माल ?
करो ख़ुदा के लिए कुछ मरे हुओं का ख़याल
न हों तुम्हारे बुज़ुर्गों की हड्डियां पामाल[6]

ये आबरू तो हज़ारों बरस में पायी है
न यूं लुटाओ, कि ऋषियों की यह कमाई है

---

१. अज्ञान २. अंधेरी ३. जागृत ४. अवनति ५. परलोक
६. पद-दलित

लुटाओ नाम पे दौलत, अगर हो ग़ैरतदार
पुकार उट्ठे ज़माना कि यह है पर-उपकार
है ज़ोरे-हिम्मते-मर्दाना क़ौम को दरकार
वरक़ उलट दो ज़माने का मिलके सब इक बार

अगर हो मर्द, न यूं उम्र रायगां काटो
ग़रीब क़ौम के पैरों की बेड़ियां काटो

ये कारे-ख़ैर वो हो नाम चार-सू[1] रह जाय
तुम्हारी बात ज़माने के रूबरू[2] रह जाय
जो ग़ैर हैं उन्हें हँसने की आरज़ू रह जाय
ग़रीब क़ौम की दुनिया में आबरू रह जाय

ज़रा हमीयतो-ग़ैरत[3] का हक़ अदा कर दो
फ़क़ीर क़ौम के आये हैं झोलियां भर दो

यहाँ से जाएँ तो जाएँ ये झोलियां भर कर
लुटायें इल्म की दौलत तुम्हारे बच्चों पर
इधर हो नाज़ ये तुम को कि ख़ुश गये ये बशर[4]
जो हो सका वो किया नज़्र इनके टेक के सर

यही हो फ़ख़्र[5] जवानों का और पीरों का
सवाल रद न किया क़ौम के फ़क़ीरों का

१. चारों ओर २. सामने ३. क़ौमी शान ४. व्यक्ति ५. गर्व

आसफ़-उद्दौला का इमाम बाड़ा

आसफ़-उद्दौलाए - मरहूम की तामीरे-कुहन[1]
जिसकी सनअ़त[2] का नहीं सफ़हाए-हस्ती[3] पे जवाब
देख सय्याह[4] इसे रात के सन्नाटे में
मुंह से अपने महे-कामिल[5] ने जब उलटी हो नक़ाब
दरो - दीवार नज़र आते हैं क्या साफ़ो - सुबक[6]
सहर[7] करती है निगाहों पे ज़ियाए - महताब[8]
यह होता है गुमां खाक से मस[9] इसको नहीं
है संभाले हुए दामन में हवाए-शादाब
यक - ब - यक दीदाए - हैरां[10] को ये शक होता है
ढल के सांचे में ज़मीं पर उतर आया है सहाब[11]
बेखुदी कहती है आया ये फ़ज़ा में क्योंकर
किसी उस्ताद मुसव्वर[12] का है यह जल्वाए-ख़्वाब[13]

इक अजब मंज़रे-दिलगीर[14] नज़र आता है
दूर से आलमे - तसवीर नज़र आता है

शौक़ तो शाने - इमारत की खबर देता है
परदाए-शब[15] के सरकने पे सहर[16] का अंदाज़

१. पुरानी इमारत २. कला ३. संसार ४. यात्री ५. पूर्णेन्दु ६. साफ़ और नफ़ीस ७. जादू ८. चाँदनी ९. लगाव १०. हैरान आँख ११. बादल १२. चित्रकार १३. स्वप्न १४. सुन्दर दृश्य १५. रात का परदा १६. सुबह

वह सफ़ेदी सहरे-नूर की हल्की - हल्की
आशियां छोड़ के जब करते हैं तायर[1] परवाज़[2]
ऐसे आलम में वो कुहरे से उभरना इसका
जैसे मौजों के तलातुम[3] से नुमायां हो जहाज़
होते हैं गुम्बदो - मीनार फ़ज़ा में ज़ाहिर
बढ़ के होती हैं ज़ियारत[4] से निगाहें मुमताज़[5]
जगमगाता है शुआओं[6] में ये ऐवाने - बुलंद[7]
जिसकी सनअ़त का है दुनिया से निराला अंदाज़
पाराए-चोब[8] के अहसां की ज़रूरत न रही
ख़ाक और ख़िश्त[9] ने मिलकर ये दिखाया एजाज़
इसकी तामीर को आये नहीं मेमारे-फ़िरंग[10]
है ये तहज़ीबे-अवध के लिए सरमायाए-नाज़
बच गया ख़ाक के परदे पे ये मिट्टी का तिलिस्म
गो ज़माने की हवा इसके लिए थी नासाज़[11]
इसके साये में गिरा ताजे - हुकूमत सर से
इसने देखा ये ज़माने का नशेब[12] और फ़राज़[13]
मिल गये ख़ाक में सब इसके बसाने वाले
कुछ शजरहाए-कुहन[14] अब हैं पुराने दमसाज़
क्या सरे-शाम उदासी का समां रहता है
दरो-दीवार से कर जाती है रौनक़ परवाज़

१. पक्षी २. उड़ान ३. हलचल ४. दर्शन ५. प्रतिष्ठित ६. किरणों ७. ऊंची इमारत ८. लकड़ी का टुकड़ा ९. ईंट १०. अंगरेज निर्माता ११. प्रतिकूल १२. नीचाई १३. ऊंचाई १४. पुराने पेड़

धूप उतरती हुई आंखों को ये दिखलाती है
दिले-मजरूह[१] का हर ख़िश्त में है सोज़ो-गुदाज़[२]
जिसके फ़ैज़ाने-हुकूमत[३] का करिश्मा है यह
जिसके साये में है सोया हुआ वो खल्क़-नवाज़[४]
उसकी हिम्मत की बुलन्दी है बुलन्दी इसकी
उसके इख़लास[५] की वुसअ़त[६] का है इसमें अंदाज़
जब ज़ियारत को मुहर्रम में बशर आते हैं
चांदनी रात में आती है फ़लक[७] से आवाज़

"बेअदब पा मनेह ईंजा कि अजब दरगाहस्त
सजदागाहे - मलक-ओ-रौज़ाए-शाहंशाहस्त"[८]

१. दुखी हृदय २. दुख ३. शासन ४. पृथ्वी-पाल ५. दया ६. विस्तार ७. आकाश ८. "इस जगह बेअदबी से पांव न रख, यह अजीब दरगाह है, यहां फ़रिश्ते सर झुकाते हैं, यह सम्राट की समाधि है।"

तृतीय भाग

नौहाजात

[बिशन नारायण दर]

सदमाए-ग्राम है वह क़ौम का प्यारा न रहा
बेज़बानों की ज़बां, दिल का सहारा न रहा
गुलशने-इल्मो-ग्रदब[1] का चमन-ग्रारा[2] न रहा
मतलाए-दानिशो-बीनिश[3] का सितारा न रहा

सब ये ग़म एक तरफ़, एक तरफ़ ग़म ग्रपना
जिससे दुनिया नहीं वाक़िफ़ वो है मातम ग्रपना

हमने देखे हैं तेरे ग्रश्के-मुहब्बत ग्रक्सर
जिन पे सदक़े हैं ज़बां ग्रौर क़लम के जौहर
दो नगीने थे हमीयत[4] के तेरे क़ल्बो-जिगर[5]
हुई ग़ैरों को न इस पाक ख़ज़ाने की ख़बर

ज़ाहिरी हुस्ने - लियाक़त के ये दीवाने हैं
शमग्र देखी नहीं, फ़ानूस के परवाने हैं

दौलते - इल्मो - हुनर से नहीं दुनिया ख़ाली
बज़्मे - ग्रालम की ये रौनक़ नहीं जाने वाली

१. विद्या का उद्यान २. माली ३. ज्ञान का ग्राकाश ४. गौरव
५. दिल ग्रौर कलेजा

पर है कमयाब[1] वो जौहर, वो सरिश्ते-आली[2]
आदमीयत की बिना[3] जिसने अज़ल[4] में डाली
कुछ बड़ी बात नहीं फ़ाज़िले-दौरां[5] होना
आदमी के लिए मेराज[6] है इन्सां होना

आदमीयत की ये तसवीर मिटी जाती है
हुस्ने-इख़लाक़[7] की तदबीर मिटी जाती है
जज़्बाए-ख़ैर[8] की तौक़ीर[9] मिटी जाती है
हम मिटे जाते हैं तक़दीर मिटी जाती है
दिले - मायूस मुहब्बत का अज़ा - ख़ाना[10] है
अपनी आंखों में ये दुनिया नहीं वीराना है

है नज़र में तेरी हस्ती के सितारे का ज़वाल[11]
वो शबे-ग़म[12] की सियाही[13] वो महन का भूचाल
तब भी सौदाये-वतन[14] था तेरे जीने का मआल[15]
ख़ौफ़ कहते हैं किसे, मौत का आया न ख़याल
काहिशे-तन[16] से तबीयत की जिला[17] कम न हुई
रोशनी शमअ़ की धुलने से ज़रा कम न हुई

---

१. दुर्लभ २. सच्चरित्र ३. नींव ४. सृष्टि का आरम्भ ५. विद्वान ६. सर्वोच्च पद ७. सभ्यता ८. सद्भावना ९. प्रतिष्ठा १०. मातम का घर ११. अवनति १२. दुख की रात १३. अन्धकार १४. देश प्रेम १५. लक्ष्य १६. शरीर का दौर्बल्य १७. चमक

तुझको जोगी कहूं या आ़लमे-बाला का सफ़ीर[१]
था अलग अहले-जहां[२] से तेरी मिट्टी का ख़मीर
आंच दुनियाए-दनी[३] की जो रही दामनगीर[४]
क्या सबक़ रूह को लेना था यहां बन के असीर

क्या इसी तरह से फ़ितरत की सफ़ा[५] मुमकिन थी
क्या इसी आग में जलने से जिला[६] मुमकिन थी

रविशे - आ़म से तुझको न सरोकार रहा
जौहरे - ख़ास[७] का हस्ती से तलबगार रहा
गो कि जंजाल में दुनिया के गिरफ़्तार रहा
अपने दामन को समेटे हुए हुशियार रहा

रंगे - दुनिया से रहा आ़लमे-फ़ानी[८] में जुदा
जैसे लहरों में कमल रहता है पानी में जुदा

तुझको मालूम न था दौलते-दुनिया क्या है
हिर्स क्या शै है, ज़रो-माल का सौदा[९] क्या है
ख़ुदपरस्ती[१०] का ज़माने में तक़ाज़ा क्या है
ऐश क्या चीज़ है राहत की तमन्ना क्या है

तू न समझा कभी ग़ैरों की मदद के ग़म में
अपनी राहत का भी सामान है इस आ़लम में

---

१. दूत २. दुनिया वाले ३. तुच्छ संसार ४. दामन पकड़ने वाली
५. निर्मलता ६. चमक ७. परम तत्व ८. नश्वर संसार ९. प्रेम
१०. स्वार्थ

कारे-दुनिया[1] में गिरफ़्तार हैं जो दुनियादार
उनको देखा है तेरी बेख़बरी से बेज़ार
तू कहां और कहां उनकी नज़र का मेअ़ार[2]
फूल जो उनके लिए हैं वो तुझे थे ख़सो-ख़ार

लुत्फ़ इस बेख़बरी का वो उठायें क्योंकर
ख़ाक में लोटते हैं, अ़र्श[3] पे जायें क्योंकर

ख़िलअ़ते - नूर[4] तबीयत को दिया क़ुदरत ने
आबरू इल्म ने दी, ज़र्फ़[5] दिया ग़ैरत ने
ख़ुद - पसंदी को गवारा न किया आदत ने
सात परदों से निकाला तुझे ख़ुद शोहरत ने

तू मगर जौहरे-ज़ाती[6] को दबाता ही रहा
अपने दामन में चिराग़ अपना जलाता ही रहा

शोहराए-आ़म[7] को समझा न लियाक़त का सिला[8]
नुक्ताचीनों[9] से शिकायत, न रक़ीबों से गिला
दीदाए - ग़ैर में खटकी न तबीयत की जिला
तू ज़माने से महे-नौ[10] की तरह झुक के मिला

आजिज़ी दिल की झलकती रही पेशानी[11] से
तू वो दरिया था जो वाक़िफ़ नहीं तुग़यानी[12] से

१. दुनिया का काम २. स्तर ३. सातवां आसमान ४. प्रकाश की ख़िलअ़त ५. महानता ६. अपनी अच्छाई ७. ख्याति ८. इनाम ९. निंदकों १०. नया चांद ११. माथा १२. तूफ़ान

दिल मुहब्बत पे फ़िदा, आंख मुरौवत से ग़नी[1]
तुझको दुश्मन की भी मंज़ूर न थी दिल-शिकनी
मगर इंसाफ़ के हक़ में हो अगर नेशज़नी[2]
फिर न था तुझसे जियादा कोई जुर्रत का धनी
शेर - नर मारकाए - आम[3] की सरगर्मी में
तिफ़्ले - मासूम[4] से मिलता हुआ दिल नर्मी में

आजकल मेह्रो - वफ़ा में है तिजारत की अदा
कोई बेकस का नहीं दोस्त बजुज़ ज़ाते - ख़ुदा
यूं हुआ करते हैं याराने - कुहन[5] दिल से जुदा
जैसे पत्तों से गिरा देती है पानी को हवा
जिसका इक़बाल ज़माने में चमक जाता है
उसको बचपन के रफ़ीक़ों से हिजाब आता है

न हुआ फ़र्क़ तेरे रंगे - मुहब्बत में अयां
धूप दौलत की रही या रही इफ़लास की छां
तेरी खिदमत से हो अहबाब की मुश्किल आसां
दीन तेरा था यही और यही तेरा ईमां
एक ही वजअ़ रही एक ही अंदाज़ रहा
अपने प्यारों की ग़ुलामी पे तुझे नाज़ रहा

---

१. धनी २. हत्या ३. सार्वजनिक कार्य का रणक्षेत्र ४. भोला-भाला बच्चा ५. पुराने साथी

बदनसीब ऐसे भी हैं तुझसे जो बेज़ार रहे
आके दुनिया में फ़क़त तेरे दिलाज़ार रहे
ऐसे बेदर्द ज़माने के गुनहगार रहे
मगर अहसान से तेरे न सुबकबार[१] रहे
उनको शर्मिंदा किया तूने मुहब्बत करके
ख़ुद गुनहगार हुए तुझसे अ़दावत करके

दिल हो तेरा सा तो दुनिया की हक़ीक़त क्या है
तन-परस्ती[२] पे जो हो सर्फ़[३] वो दौलत क्या है
ग़ैर को जिससे न राहत हो वो राहत क्या है
जिसमें सौदा[४] न हो कुछ भी वो तबीयत क्या है
ज़िंदगी यूं तो फ़क़त बाज़िए-तिफ़लाना[५] है
मर्द है जो कि किसी रंग में दीवाना है

१. उऋण २. शरीर के लिए ३. खर्च ४. प्रेम ५. बच्चों का खेल

गोपालकृष्ण गोखले

लरज़[१] रहा था वतन जिस ख़याल के डर से
वो आज ख़ून रुलाता है दीदाए - तर[२] से
सदा ये आती है फल फूल और पत्थर से
ज़मीं पे ताज गिरा क़ौमे - हिन्द के सर से

हबीब क़ौम का दुनिया से यूं रवाना हुआ
ज़मीं उलट गई, क्या मुन्क़लिब[३] ज़माना हुआ

बढ़ी हुई थी नहूसत ज़वाले - पैहम[४] की
तेरे ज़हूर[५] से तक़दीर क़ौम की चमकी
निगाहे - यास थी हिन्दोस्तां पे आलम की
अजीब शै थी मगर रोशनी तेरे दम की

तुझी को मुल्क में रोशन - दिमाग़ समझे थे
तुझे ग़रीब के घर का चिराग़ समझे थे

वतन को तूने संवारा किस आबो-ताब के साथ
सहर का नूर बढ़े जैसे आफ़ताब के साथ
चुने रिफ़ाह[६] के गुल हुस्ने - इन्तख़ाब[७] के साथ
शबाब क़ौम का चमका तेरे शबाब के साथ

जो आज नश्वो - नुमां का नया ज़माना है
ये इन्क़लाब तेरी उम्र का फ़साना है

रहा मिज़ाज में सौदाए - क़ौम[८] ख़ू[९] होकर
वतन का इश्क़ रहा दिल की आरज़ू होकर

१. कांप २. भीगी आंख ३. उलट-पलट ४. निरंतर अवनति
५. प्रकट होना ६. भलाई ७. बढ़िया चुनाव ८. देश-प्रेम ९. आदत

बदन में जान रही वक़्फ़े - आबरू[१] होकर
रगों में अश्के - मुहब्बत रहे लहू होकर
खुदा के हुक्म से यह आबो-गिल[२] बना तेरा
किसी शहीद की मिट्टी से दिल बना तेरा

वतन की जान पे क्या क्या तबाहियां आयीं
उमंड उमंड के जहालत की बदलियां आयीं
चिराग़े - अम्न बुझाने को आंधियां आयीं
दिलों में आग लगाने को बिजलियां आयीं
इस इन्तशार[३] में जिस नूर का सहारा था
उफ़क़[४] पे क़ौम के वो एक ही सितारा था

हदीसे - क़ौम[५] बनी थी तेरी ज़बां के लिए
ज़बां मिली थी मुहब्बत की दास्तां के लिए
खुदा ने तुझको पयम्बर किया यहां के लिए
कि तेरे हाथ में नाक़ूस[६] था अज़ां के लिए
वतन की खाक तेरी बारगाहे - आ़ला[७] है
हमें यही नई मस्जिद नया शिवाला है

ग़रीब हिन्द ने तनहा नहीं ये दाग़ सहा
वतन से दूर भी तूफ़ान रंजो-ग़म का उठा
हबीब क्या हैं हरीफ़ों[८] ने ये ज़बां से कहा
सफ़ीरे - क़ौम[९] जिगरबन्दे - सल्तनत[१०] न रहा

१. प्रतिष्ठा के लिए बलिदान २. शरीर ३. विघटन ४. क्षितिज ५. देश-कथा ६. शंख ७. पूजा-स्थल ८. वैरियों ९. देश के प्रतिनिधि १०. राज्य का प्यारा

पयाम शह ने दिया रंजे-ताज़ियत[1] के लिए
कि तू सतून[2] था ऐवाने-सल्तनत[3] के लिए
दिलों पे नक़्श हैं अब तक तेरी ज़बां के सुख़न[4]
हमारी राय में गोया चिराग़ हैं रोशन
फ़क़ीर थे जो तेरे दर के ख़ादिमाने-वतन[5]
उन्हें नसीब कहां होगा अब तेरा दामन
तेरे अलम में वो इस तरह जान खोते हैं
कि जैसे बाप से छुटकर यतीम रोते हैं
अजल[6] के दाम[7] में आना है यूं तो आलम को
मगर ये दिल नहीं तैयार तेरे मातम को
पहाड़ कहते हैं दुनिया में ऐसे ही ग़म को
मिटा के तुझको अजल ने मिटा दिया हमको
जनाज़ा हिन्द का घर तेरे से निकलता है
सुहाग क़ौम का तेरी चिता में जलता है
रहेगा रंज ज़माने में यादगार तेरा
है कौन दिल कि नहीं जिसमें है मज़ार तेरा
जो कल रक़ीब था है आज सोगवार[8] तेरा
ख़ुदा के सामने है मुल्क शर्मसार तेरा
पली है क़ौम तेरे सायाए-करम[9] के तले
हमें नसीब थी जन्नत तेरे क़दम के तले

१. मातम-पुरसी २. स्तम्भ ३. राज्य की इमारत ४. बातें
५. देश-सेवक ६. मौत ७. जाल ८. रोने वाला ९. छत्रछाया

बाल गङ्गाधर तिलक

मौत ने रात के परदे में किया कैसा वार
रोशनी सुबहे-वतन की है कि मातम का ग़ुबार
मारका[१] सर्द है, सोया है वतन का सरदार
तनतना[२] शेर का बाक़ी नहीं, सूनी है कछार
बेकसी छायी है, तक़दीर फिरी जाती है
क़ौम के हाथ से तलवार गिरी जाती है

उठ गया दौलते - नामूसे - वतन[३] का वारिस
क़ौमे-मरहूम[४] के एज़ाज़े - कुहन[५] का वारिस
जां-निसारे - अज़ली[६] शेरे - दकन[७] का वारिस
पेशवाओं के गरजते हुए रन का वारिस
थी समायी हुई पूना की बहार आंखों में
आख़िरी दौर का बाक़ी था ख़ुमार आंखों में

मौत महाराष्ट्र की थी या तेरे मरने की ख़बर
मुर्दनी छा गयी इंसान तो क्या पत्थर पर
पत्तियां झुक गयीं, मुरझा गये सहरा के शजर[८]
रह गये जोश में बहते हुए दरिया थमकर
सर्द शादाब हवा रुक गयी कुहसारों[९] की
रोशनी घट गयी दो-चार घड़ी तारों की

१. रणक्षेत्र २. आतंक ३. देश की प्रतिष्ठा ४. मृत राष्ट्र ५. प्राचीन प्रतिष्ठा ६. पैदायशी सूरमा ७. दकन का शेर ८. वृक्ष ९. पर्वतों

था निगहबाने - वतन दबदबाए - आम[1] तेरा
न डिगें पांव ये था क़ौम को पैग़ाम तेरा
दिल रक़ीबों के लरज़ते[2] थे ये था काम तेरा
नींद से चौंक पड़े सुन जो लिया नाम तेरा

याद करके तुझे मज़लूमे - वतन[3] रोयेंगे
बन्दाए - रस्मे - जफ़ा[4] चैन से अब सोयेंगे

ज़िन्दगी तेरी बहारे - चमनिस्ताने - वफ़ा[5]
आबरू तेरे लिए क़ौम से पैमाने - वफ़ा
आशिक़े - नामे - वतन कुश्ताए - अरमाने-वफ़ा[6]
मर्दे - मैदाने - वफ़ा, जिस्मे - वफ़ा, जाने - वफ़ा

हो गई नज़्रे - वतन हस्तिए - फ़ानी[7] तेरी
न तो पीरी[8] रही तेरी न जवानी तेरी

औजे - हिम्मत[9] पे रहा तेरी वफ़ा का खुर्शेद[10]
मौत के ख़ौफ़ पे ग़ालिब रही ख़िदमत की उमेद
बन गया क़ैद का फ़रमान भी राहत की नवेद
हुए तारीकिए - ज़िन्दां[11] में तेरे बाल सफ़ेद

घिर रहा है मेरी आंखों में सरापा[12] तेरा
आह वो क़ैदे - सितम और बुढ़ापा तेरा

---

१. शान २. कांपते ३. देश के पीड़ित लोग ४. अत्याचारी
५. प्रेमोद्यान का वसंत ६. प्रेम का शहीद ७. नश्वर जीवन ८. बुढ़ापा
९. साहस की ऊंचाई १०. सूर्य ११. क़ैद का अन्धेरा १२. सिर से पांव तक

मोजज़ा[1] अश्के - मुहब्बत का दिखाया तूने
एक क़तरे से ये तूफ़ान उठाया तूने
मुल्क को हस्तिए - बेदार[2] बनाया तूने
जज़्बाए - क़ौम के जादू को जगाया तूने

इक तड़प आ गयी सोते हुए अरमानों में
बिजलियां कौंद गयीं क़ौम के वीरानों में

लाश को तेरी संवारें न रफ़ीक़ाने - कुहन[3]
हो जबीं[4] के लिए संदल की जगह ख़ाके - वतन
तर हुआ है जो शहीदों के लहू से दामन
दें उसी का तुझे पंजाब के मज़लूम कफ़न

शोरे - मातम न हो, झंकार हो ज़ंजीरों की
चाहिए क़ौम के भीषम को चिता तीरों की

१. चमत्कार २. जागृत ३. पुराने साथी ४. माथा

मातमे-यास

ऐ जवानी के मुसाफ़िर ! ऐ अजल[1] के मेहमां
सो गया तू सुनते-सुनते ज़िन्दगी की दास्तां
थक के नींद आयी है, होता है ये चितवन से अयां
नीमबाज़[2] आंखों में है कैफ़ीयते-ख़्वाबे-गिरां[3]

कारे-दुनिया से कोई यूं बेख़बर होता नहीं
रात भर जागा हुआ दूल्हा भी यूं सोता नहीं

सुबह का तारा भी चमका, हो गया दिन आशकार
तेरे चेहरे से मगर सरकी न चादर ज़ीनहार[4]
देख ले उठकर ज़रा अपनी जवानी की बहार
सुन तो, क्या कहती है मां शाना[5] हिलाकर बार-बार

यह कफ़न हर्गिज़ नहीं तेरे पिन्हाने के लिए
लाई हूं ख़िलअ़त तुझे दूल्हा बनाने के लिए

महफ़िले-अहबाब में मातम है, तू है मस्ते-ख़्वाब
कुछ ख़बर है आज किस-किस की हुई मिट्टी ख़राब
आख़िरी तसलीम के मुश्ताक़ हैं, कुछ दे जवाब
फिर नज़र आयेगी काहे को ये तसवीरे-शबाब

हँसके हर इक बात पर वह जुंबिशे-अबरू[6] कहां
इक नज़र फिर देख कि अब हम कहां और तू कहां

ऐ मुहब्बत के फ़रिश्ते ! ऐ वफ़ा के आफ़ताब !
तेरे सीने में सफ़ा[7] थी जैसे आईने में आब

१. मौत २. अधखुली ३. गहरी नींद की स्थिति ४. हर्गिज़
५. कंधा ६. भौं हिलना ७. चमक

वास्ते दुश्मन के भी लाया न तू दिल में अ़ताब[१]
आज क्यों आता है तुझ को भाई-बहनों से हिजाब
आज तू सुनता किसी की गिरियाओ-ज़ारी[२] नहीं
ओ अ़दम[३] के जाने वाले ! यह वफ़ादारी नहीं

मां को रोना है कि जाता है तो जा मिलकर गले
भाई कहता है, रहूंगा किसकी छाती के तले
कहती हैं बहनें कहां मुंह मोड़कर भाई चले
ध्यान भी कुछ उसका है जिस गोद में हम-तुम पले
कुछ सहारा चाहिए अहले-मुहन[४] के वास्ते
भाई की ढाढ़स बड़ी शै है बहन के वास्ते

तेरी बालीं[५] पर खड़ा है और भी इक सोगवार[६]
वह अज़ीज़ों से सिवा तेरा अनीसो-ग़मगुसार[७]
छोड़कर घर-बार तुझ पर जान की अपनी निसार
वह मुहब्बत का फ़साना भी रहेगा यादगार
गो कि बाक़ी अब दिलों में जज़्बाए-आ़ली[८] नहीं
पाक रूहों से मगर दुनिया अभी ख़ाली नहीं

उस शहीदे-यास का सदमा अयां[९] होता नहीं
आह वह करता नहीं, अश्कों से मुंह धोता नहीं
जाने-ग़मगीं नालाओ-फ़रियाद से खोता नहीं
क्या क़यामत है कि सब रोते हैं वह रोता नहीं
नालाओ-फ़रियाद उसके ज़ख़्म का मरहम नहीं
चार आंसू का जो हो मोहताज यह वो ग़म नहीं

१. क्रोध २. रोना-पीटना ३. परलोक ४. रोने वाले ५. सिरहाने
६. रोने वाला ७. प्रेमी ८. सद्भाव ९. प्रकट

यह वो रोना है जो रोते हैं तेरे पसमांदगां[1]
है दिले-नाशाद को कुछ और ही रोना यहां
याद करके उनको रोती है ये चश्मे-खूंफ़शां[2]
तेरी पेशानी[3] पे देखे थे जो अ़ज़मत[4] के निशां

तू मरा क्या, क़ौम का तेरी मुक़द्दर फिर गया
एक मोती और दामन से हमारे गिर गया

वह अदब वह इल्म, वह तहज़ीब और वह इंकसार[5]
ज़िन्दगी तेरी थी हम-चश्मों[6] में अपने यादगार
ज़ेवरे-इख़लाक़[7] था तेरी जवानी का सिंगार
जब तलक ज़िन्दा रहा यकसां रहा तेरा शुआ़र

ख़िदमते-इंसां ब-यादे-किब्रिया[8] होती रही
दिल के आईने पे मज़हब की जिला होती रही

तूने जिस दुनिया पे खोली आंख, ऐ नक़्शे-फ़ना[9]
कुछ मुआफ़िक़ थी न तेरे वास्ते उसकी हवा
फ़ैज़े-क़ुदरत ने मगर जौहर किये ऐसे अ़ता
बाअ़से-हैरत हुई दिल को तेरी नश्वो-नुमा[10]

मैं ये कहता था कि खाक़स्तर[11] से आईना मिला
नूर तारीकी[12] में, वीराने में गंजीना[13] मिला

यह तमन्ना थी ये आईना जिला पायेगा अब
फैलकर यह नूर बज़्मे-क़ौम तक आयेगा अब

---

१. पीछे छूटने वाले २. खून रोती हुई आंख ३. माथा ४. महानता ५. विनम्रता ६. साथियों ७. सभ्यता ८. ईश्वर-चिन्तन के साथ ९. मिटने वाले चिह्न १०. बढ़ना ११. मिट्टी १२. अन्धेरे १३. खजाना

इल्म का इफ़लास[1] इस दौलत से मिट जायेगा अब
जानता था कौन, गरदूँ[2] यह सितम ढायेगा अब
आईना टूटा, नज़र से नूरे-हस्ती खो गया
यह ख़ज़ाना क़ौम की क़िस्मत से मिट्टी हो गया

इस दिले-नाशाद में कुछ हसरतों के हैं मज़ार
और इक छोटी-सी तुरबत[3] होगी तेरी यादगार
फूल जब गुलज़ार में लायेंगे पैग़ामे-बहार
याद करके तुझको यूं रोयेगा तेरा सोगवार
खिल के गुल कुछ तो बहारे-जांफ़ज़ा[4] दिखला गये
हसरत उन गुंचों[5] पे है जो बिन खिले मुरझा गये

तेरी हस्ती थी अगर दीबाचाए-अंदोहो-ग़म[6]
आलमे-फ़ानी[7] में रक्खा किस लिए तूने क़दम
उन पे हसरत है जो यूं देते हैं ग़मगीनों को दम
ख़्वाब यह दुनिया है यां कैसी ख़ुशी कैसा अलम[8]
इन्तज़ामे-दहर[9] में आख़िर है फिर तदबीर क्या
ख़्वाबे-दुनिया है तो है इस ख़्वाब की ताबीर[10] क्या

१. निर्धनता २. आसमान, भाग्य ३. क़ब्र ४. सुन्दर बहार ५. कलियों ६. दुख की भूमिका ७. नश्वर संसार ८. दुख ९. संसार की व्यवस्था १०. स्वप्न-फल

चतुर्थ भाग

मज़हबे-शायराना

कहते है जिसे अब्र[१] वो मैख़ाना है मेरा
जो फूल खिला बाग़ में पैमाना है मेरा
कैफ़ीयते - गुलशन[२] है मेरे नश्शे का आलम
कोयल की सदा नाराए - मस्ताना है मेरा
पीता हूं वो मै[३] नश्शा उतरता नहीं जिसका
ख़ाली नहीं होता है वो पैमाना है मेरा
दरिया मेरा आईना है, लहरें मेरे गेसू
और मौजे - नसीमे - सहरी[४] शाना[५] है मेरा
हर ज़र्राए - ख़ाकी[६] है मेरा मूनिसो-हमदम[७]
दुनिया जिसे कहते हैं वो काशाना[८] है मेरा
जिस जा[९] हो ख़ुशी, है वो मेरी मंज़िले-राहत
जिस घर में हो मातम वो अज़ाख़ाना[१०] है मेरा
जिस गोशाए-दुनिया[११] में परस्तिश[१२] हो वफ़ा की
काबा है वही और वही बुतख़ाना है मेरा
मैं दोस्त भी अपना हूं उदू[१३] भी मैं हूं अपना
अपना है कोई और न बेगाना है मेरा
आशिक़ भी हूं माशूक़ भी यह तुर्फ़ा मज़ा है
दीवाना हूं मैं जिसका वो दीवाना है मेरा

१. बादल २. बाग़ की मस्ती ३. शराब ४. सुबह की हवा का झोंका ५. कंघा ६. रज-कण ७. साथी ८. घर ९. जगह १०. रोने की जगह ११. संसार का कोना १२. पूजा १३. दुश्मन

ख़ामोशी में यां रहता है तक़रीर का आ़लम
मेरे लबे - ख़ामोश पे अफ़साना है मेरा
कहते हैं ख़ुदी किसको, ख़ुदा नाम है किसका
दुनिया में फ़क़त जल्वाए - जानाना[1] है मेरा
मिलता नहीं हर एक को वह नूर है मुझमें
जो साहबे - बीनिश[2] हो वो परवाना है मेरा
शायर का सुख़न[3] कम नहीं मजज़ूब[4] की बड़ से
हर एक न समझेगा ये अफ़साना है मेरा

◇ ◇ ◇

फ़ना नहीं है मुहब्बत के रंगो-बू के लिए
बहारे - आ़लमे - फ़ानी रहे रहे न रहे
जुनूने - हुब्बे - वतन का मज़ा शबाब में है
लहू में फिर ये रवानी रहे रहे न रहे
रहेगी आबो-हवा में ख़याल की बिजली
ये मुश्ते - ख़ाक[5] है फ़ानी[6] रहे रहे न रहे
जो दिल में ज़ख़्म लगे हैं वो ख़ुद पुकारेंगे
ज़बां की सैफ़-बयानी[7] रहे रहे न रहे
मिटा रहा है ज़माना वतन के मंदिर को
ये मरमिटों की निशानी रहे रहे न रहे
दिलों में आग लगे यह वफ़ा का जौहर है
ये जमअ़-खर्च ज़बानी रहे रहे न रहे

१. प्रिय की छवि २. ज्ञानवान ३. काव्य ४. पागल ५. मुट्ठी भर मिट्टी ६. नश्वर ७. तेज़ी

जो मांगना हो अभी मांग लो वतन के लिए
ये आरज़ू की जवानी रहे रहे न रहे

◇ ◇ ◇

कभी था नाज़ ज़माने को अपने हिन्द पे भी
पे अब उरूज[1] वो इल्मो-कमालो-फ़न[2] में नहीं
रगों में ख़ून वही, दिल वही, जिगर है वही
वही ज़बां है मगर वो असर सुख़न[3] में नहीं
वही है बज़्म[4], वही शमअ़ है, वही फ़ानूस
फ़िदाए-बज़्म वो परवाने अंजुमन में नहीं
वही हवा, वही कोयल, वही पपीहा है
वही चमन है पे वह बाग़बां चमन में नहीं
ग़रूरो-जहल[5] ने हिन्दोस्तां को लूट लिया
बजुज़[6] निफ़ाक़[7] के अब ख़ाक भी वतन में नहीं

◇ ◇ ◇

कमाले - बुज़दिली है पस्त होना अपनी आंखों में
अगर थोड़ी-सी हिम्मत हो तो फिर क्या हो नहीं सकता
उभरने ही नहीं देती यहां बेमायगी[8] दिल की
नहीं तो कौन क़तरा है जो दरिया हो नहीं सकता

◇ ◇ ◇

---

१. उत्थान २. विद्या और कला ३. बात ४. सभा ५. घमंड और अज्ञान ६. सिवाय ७. फूट ८. निर्धनता

अगर दर्दे - मुहब्बत से न इंसां आशना[1] होता
न मरने का सितम होता न जीने का मज़ा होता
बहारे-गुल में दीवानों के सहरा[2] में पड़ा होता
जिधर उठती नज़र कोसों तलक जंगल हरा होता
मए-गुलरंग[3] लुटती यूं दरे-मैख़ाना[4] वा[5] होता
न पीने में कमी होती न साक़ी से गिला होता
हज़ारों जान देते हैं बुतों की बेवफ़ाई पर
अगर इनमें से कोई बावफ़ा होता तो क्या होता
रुलाया अहले-महफ़िल को निगाहे - यास[6] ने मेरी
क़यामत थी जो इक क़तरा इन आंखों से जुदा होता
ख़ुदा को भूलकर इंसान के दिल का ये आ़लम है
ये आईना अगर सूरत-नुमा[7] होता तो क्या होता
अगर दमभर भी मिट जाती ख़लिश ख़ारे-तमन्ना[8] की
दिले-हसरत-तलब[9] को अपनी हस्ती से गिला होता
हवस जीने की है यूं उम्र के बेकार कटने पर
जो हमसे ज़िन्दगी का हक़ अदा होता तो क्या होता
ये माना बेहिजाबाना[10] निगाहें क़हर करती हैं
मगर हुस्ने-हया-परवर[11] का आ़लम दूसरा होता

---

१. परिचित २. जंगल ३. लाल शराब ४. मदिरालय का द्वार ५. खुला ६. निराशापूर्ण दृष्टि ७. मुख दिखाने वाला ८. प्रेम की शूल ९. प्रेमी हृदय १०. बेझिझक ११. लज्जाशील सौंदर्य

ज़बां के ज़ोर पर हंगामा-आराई[1] से क्या हासिल
वतन में एक दिल होता मगर दर्द-आशना[2] होता

◇ ◇ ◇

जहां में आंख जो खोली फ़ना[3] को भूल गये
कुछ इब्तदा[4] ही में हम इन्तहा[5] को भूल गये
निफ़ाक़[6] गब्रो-मुसलमां[7] का यूं मिटा आख़िर
ये बुत को भूल गये वो ख़ुदा को भूल गये
हुआ मिज़ाज का आलम ये सैरे-योरोप से
कि अपने मुल्क की आबो-हवा को भूल गये
ज़मीं लरज़ती[8] है, बहते हैं ख़ून के दरिया
ख़ुदी के जोश में बन्दे ख़ुदा को भूल गये
ये इन्क़लाब हुआ आलमे-असीरी[9] में
क़फ़स[10] में रह के हम अपनी सदा[11] को भूल गये

◇ ◇ ◇

जज़्बाए-शौक़ की तासीर दिखा देते हैं
हम वो प्यासे हैं कि दरिया को बुला लेते हैं

◇ ◇ ◇

---

१. शोर करना २. प्रेमपूर्ण ३. मौत ४. आरम्भ ५. अन्त ६. दुश्मनी ७. हिन्दू-मुसलमान ८. कांपती ९. कैद की दशा १०. पिंजड़ा ११. आवाज़

हम पूजते हैं बाग़े-वतन की बहार को
आंखों में अपनी फूल समझते हैं ख़ार को
आये थे जिस चमन से वो बरबाद हो गया
अब हम क़फ़स[1] में याद करें क्या बहार को
मंज़ूर है कि आमदे-गुल[2] का पयाम दें
कलियां बुला रही हैं नसीमे-बहार को
उतरे हैं सहने-बाग़ में फूलों के क़ाफ़िले
नज़्रें दिखा रहे हैं उरूसे-बहार[3] को
राहत से भी अज़ीज़ है राहत की आरज़ू
दिल ढूंढता है सिलसिलाए-इन्तज़ार को
हसरत जो बच रही मेरे दिल से अज़ल[4] के दिन
वह मिल गयी बुझी हुई शमअ्-मज़ार को
यह कहके उनकी बज़्म[5] में हम भी पहुंच गये
क्या था जो आज याद किया ख़ाकसार को
दामाने-कोह[6] उसके लिए मां की गोद है
लेकिन ज़रा भी चैन नहीं आबशार[7] को
लाया है क्या पयामे-वतन, पूछता हूं मैं
ग़ुरबत[8] में देखता हूं जो अब्रे-बहार को
ख़ुद ही मिटा के जौहरे-ईमानो-आबरू
हम कोसते हैं गर्दिशे-लैलो-निहार[9] को

---

१. पिंजड़ा २. फूल खिलना ३. बहार-रूपी वधू ४. आदि दिवस ५. सभा ६. पहाड़ का अंचल ७. झरना ८. परदेस ९. ज़माने का चक्कर

हैं बाग़बां के भेस में गुलचीं[1] फ़िरंग के
निकले हैं लूटने चमने - रोज़गार[2] को

अरमान यही है यही आलम है नज़र में
जो बुझ न सके आग वो पैदा हो जिगर में
है शौक़ की मंज़िल यही दुनिया के सफ़र में
क्या ख़ाक जवानी है जो सौदा[3] नहीं सर में
यह रंगे-शफ़क़[4] है कि लहू अहले-वफ़ा का
कुछ दाग़ नज़र आते हैं दामाने-सहर[5] में
दुनिया मेरे नाले[6] से खिच आती है क़फ़स[7] तक
मेला सा लगा रहता है सय्याद के घर में
पाबंद क़फ़स की नहीं यह आहे-शरर-बार[8]
लग जाये कहीं आग न सय्याद के घर में
कहती है क़ज़ा, मुफ़्त के पैदा हों गुनहगार
तलवार सजी है मेरे क़ातिल की कमर में
रहती हैं उमंगें कहीं ज़ंजीर की पाबंद
हम क़ैद हैं ज़िन्दां[9] में, बियाबां है नज़र में
इक हस्तिए-बेदार[10] के दोनों हैं करिश्मे
मौजों[11] में रवानी है जवानी है बशर में

१. फूल चुनने वाले २. संसार का बाग ३. उन्माद ४. आकाश की लाली ५. सुबह का अंचल ६. रोना ७. पिंजड़ा ८. चिंगारी बरसाने वाली आह ९. क़ैदखाना १०. चेतन अस्तित्व ११. लहरों

कुछ दाग़ गुनाहों के हैं कुछ अश्के-नदामत[1]
इब्रत[2] का मुरक़्क़ा[3] है मेरे दामने-तर में
मैख़ाना है, चलता है यहां सिक्काए-जम्हूर[4]
सब शाहो-गदा एक हैं रिन्दों की नज़र में
गुलशन से न ख़ुश जायेगा शबनम का मुसाफ़िर
हंस-हंस के रुलाने की है आदत गुले-तर में
रौशन दिले-वीरां है मुहब्बत से वतन की
या जल्वाए-महताब[5] है उजड़े हुए घर में

० ० ०

ज़िन्दगी तल्ख़िए-अय्याम[6] का अफ़साना है
ज़हर भरने के लिए उम्र का पैमाना है
मै जवानी है मेरी, दिल मेरा मैख़ाना है
यां सुराही है, न शीशा है, न पैमाना है
बेहिजाब[7] आज तेरी नरगिसे-मस्ताना[8] है
अब जिसे होश का सौदा[9] है वो दीवाना है
रुख़ है साक़ी की तरफ़ हाथ में पैमाना है
रहनुमा आज तेरी लग़ज़िशे-मस्ताना[10] है
नज़र आता है फ़क़ीरी में तमाशाए-जहां
ठीकरा भीख का जमशेद का पैमाना है

१. शर्म के आंसू २. सीख ३. चित्र ४. जनतन्त्र ५. चांदनी ६. दुर्भाग्य ७. बेझिझक ८. नशीली आंख ९. उन्माद १०. शराबी की डगमगाहट

आयी है लाश उठाने को नसीमे-सहरी
छूटता बादे-फ़ना शमअ़ से परवाना है
आ़लमे-यास में दरिया में ये कहता है हुबाब[१]
ग़ैर सेराब[२] हैं, ख़ाली मेरा पैमाना है
आतिशे-शमअ़ भी काफ़ूर है उसके आगे
दिल में जो आग छुपाये हुए परवाना है
ले चली बज़्म से किस वक़्त मुझे मर्गे-शबाब[३]
लब तक आया भी नहीं हाथ में पैमाना है
याद उमंगों की दिलाता है ये उजड़ा हुआ दिल
मेरी बस्ती की निशानी यही वीराना है
यादे-अहबाबे-गुज़िश्ता[४] पे फ़िदा रहता है
दिले-नाशाद बुझी शमअ़ का परवाना है
दिल है मायूस कि नीयत नहीं साक़ी की दुरुस्त
आंख कहती है ये शीशा है वो पैमाना है
इक तरफ़ जान है, पैमाने-वफ़ा[५] एक तरफ़
इम्तहां आज तेरा हिम्मते - मरदाना है

मिट्टी हैं गुल जो और किसी बोस्तां[६] के हैं
कांटे अज़ीज़ गुलशने - हिन्दोस्तां के हैं

१. बुलबुला २. तृप्त ३. जवानी की मौत ४. विगत मित्रों की याद ५. प्रेम-प्रतिज्ञा ६. बाग़

हम सोचते हैं रात को तारों को देखकर
शमएं ज़मीन की हैं जो दाग़ आसमां के हैं
सहने-चमन से दूर उन्हें, बाग़बां ! न फेंक
तिनके जो यादगार मेरे आशियां के हैं
जन्नत में ख़ाक बादा-परस्तों[१] का दिल लगे
नक़्शे नज़र में सोहबते-पीरे-मुग़ां[२] के हैं
अपना मुक़ाम शाख़े - बुरीदा[३] है बाग़ में
गुल हैं, मगर सताये हुए बाग़बां के हैं
इक सिलसिला हवस का है इन्सां की ज़िन्दगी
इस एक मुश्ते-ख़ाक[४] को ग़म दो जहां के हैं
क़िस्से लिखे हुए हैं जो फ़रहादो-क़ैस के
खोये हुए वरक़ वो मेरी दास्तां के हैं

◇ ◇ ◇

दर्दे-दिल, पासे-वफ़ा[५], जज़्बाए-ईमां होना
आदमीयत है यही और यही इन्सां होना
नौगिरफ़्तारे-बला[६] तर्ज़े-फ़ुग़ां[७] क्या जानें
कोई नाशाद सिखादे इन्हें नालां[८] होना
चाक होकर कफ़ने-ग़ुंचा बना जामाए-गुल
खुल गया रंज से शादी[९] का नुमायां होना

---

१. शराबियों २. मदिरालय के स्वामी का साथ ३. कटी डाल ४. मिट्टी का पुतला ५. प्रेम का खयाल ६. नये फंसे हुए ७. रोने का ढंग ८. रोने वाला ९.

रह के दुनिया में है यूं तर्के-हवस[1] की कोशिश
जिस तरह अपने ही साये से गुरेज़ाँ[2] होना
ज़िन्दगी क्या है ? अनासिर[3] में ज़हूरे-तरतीब[4]
मौत क्या है ? इन्हीं अजज़ा[5] का परीशां[6] होना
दफ़्तरे-हुस्न पे मोहरे-यदे-क़ुदरत[7] समझो
फूल का ख़ाक के तूदे[8] से नुमायां होना
दिल असीरी में भी आज़ाद है आज़ादों का
वलवलों के लिए मुमकिन नहीं ज़िन्दां[9] होना
गुल को पामाल[10] न कर, लालो-गुहर[11] के मालिक !
है इसे तुर्राए - दस्तारे - ग़रीबां[12] होना
है मेरा ज़ब्ते-जुनूं जोशे-जुनूं से बढ़कर
नंग[13] है मेरे लिए चाक-गरेबां[14] होना
क़ैद यूसुफ़ को ज़ुलेख़ा ने किया, कुछ न किया
दिले-यूसुफ़ के लिए शर्त था ज़िन्दां होना

दिल ही की बदौलत रंज भी है दिल ही की बदौलत राहत भी
यह दुनिया जिसको कहते हैं दोज़ख़ भी है और जन्नत भी

---

१. इच्छाओं का त्याग २. भागना ३. पंच-तत्व ४. संगठित होना ५. टुकड़ों ६. विघटन ७. प्रकृति के हाथ की छाप ८. ढेर ९. क़ैद १०. पद-दलित ११. मोती और लाल १२. गरीबों की पगड़ी की सजावट १३. शर्म १४. कपड़े फाड़ना

अरमान भरे दिल ख़ाक हुए और मौत के तालिब जीते हैं
अंधेर पे इस दुनिया के हमें आतो है हंसी और रिक़्क़त[१] भी
या ख़ौफ़े-ख़ुदा या ख़ौफ़े-सक़र[२] हैं दो ही बयां तेरे वाइज़[३]
अल्लाह के बन्दे ! दिल में तेरे है सोज़ो-गुदाज़े-मुहब्बत[४] भी ?
जब तक है जवानी का आलम क्या ऐश की मस्ती रहती है
जब पीरी मौत की लाई ख़बर फिर ज़ुहद[५] भी है और ताअ़त[६] भी
गिरते ही ज़मीं के दामन में, ऐ तिफ़्ल[७] ! ये रोना-धोना क्या
दुनिया में अगर तू आया है यां रंज भी है और राहत भी

क़ौम की शीराज़ा-बन्दी[८] का गिला बेकार है
तर्ज़े - हिन्दू देखकर रंगे-मुसलमां देखकर
दीदनी[९] है बेख़ुदी वारफ़्तगाने-शौक़[१०] की
हँस रहे हैं ख़ुद - बख़ुद चाके - गरेबां देखकर
इन्तशारे-क़ौम[११] से जाती रही तस्कीने-क़ल्ब
नींद रुख़सत हो गई ख़्वाबे - परीशां देखकर

शाद हैं नाशाद हैं या ख़ानुमां-बरबाद[१२] हैं
हम से अच्छे हैं कि यह वहशो-तयूर[१३] आज़ाद हैं

---

१. रोना २. नर्क का भय ३. धर्मोपदेशक ४. प्रेम की नरमी
५. कर्मकांड ६. उपासना ७. बच्चे ८. संगठन ९. दर्शनीय
१० प्रेमियों ११. देश की फूट १२. उजड़े घर वाले १३. पशु-पक्षी

आबो-दाने से क़फ़स के कुछ हमें उल्फ़त नहीं
बे-परो-बाली से अपनी आशिक़े - सय्याद हैं

◇ ◇ ◇

दोस्त मरने पे मेरे दादे - वफ़ा देते हैं
हाय किस वक़्त मुहब्बत का सिला[1] देते हैं
दुश्मनों से भी मुझे तर्के-वफ़ा[2] मुश्किल है
दोस्त बनकर मुझे कमबख़्त दग़ा देते हैं

◇ ◇ ◇

मुल्क में दौलत नहीं बाक़ी दवा के वास्ते
हाथ ख़ाली रह गये हैं अब दुआ के वास्ते
ख़ुद-परस्तों[3] से हबीबाने-ख़ुदा[4] का क़ौल है
हम वफ़ा के वास्ते हैं तुम जफ़ा के वास्ते
आबो-आतश[5] की ग़ुलामी पर बशर क़ानअ़[6] नहीं
हो रही है फ़िक्र तसख़ीरे-हवा[7] के वास्ते
मुर्दादिल ज़िन्दा जफ़ाए-ज़िन्दगी सहने को हैं
मरने वाले मर गये पासे-वफ़ा के वास्ते

◇ ◇ ◇

आशना हों कान क्या इन्सान की फ़रियाद से
शैख़ को फ़ुरसत नहीं मिलती ख़ुदा की याद से

◇ ◇ ◇

---

१. इनाम २. प्रेम परित्याग ३. स्वार्थियों ४. ईश-प्रेमियों ५. आग और पानी ६. संतुष्ट ७. हवा पर क़ब्ज़ा

(पंजाब के मार्शल-लॉ के समय प्रकाशित)

उसे यह फ़िक्र है हरदम नया तर्ज़े - जफ़ा क्या है
हमें यह शौक़ है देखें सितम की इन्तहा[१] क्या है

गुनहगारों में शामिल हैं गुनाहों से नहीं वाक़िफ़
सज़ा को जानते हैं हम, ख़ुदा जाने ख़ता क्या है

ये रंगे-बेकसी रंगे-जुनूं बन जायेगा, ग़ाफ़िल !
समझले यासो-हिरमां[२] के मरज़ की इन्तहा क्या है

नया बिस्मिल हूं मैं, वाक़िफ़ नहीं रस्मे-शहादत[3] से
बता दे तू ही, ऐ ज़ालिम ! तड़पने की अदा क्या है

चमकता है शहीदों का लहू क़ुदरत के परदे में
शफ़क़[४] का हुस्न क्या है फूल की रंगीं क़बा क्या है

उमीदें मिल गईं मिट्टी में, दर्दे-ज़ब्त आख़िर है
सदाए-ग़ैब[५] ! बतला दे मुझे हुक्मे-ख़ुदा क्या है

१. पराकाष्ठा २. निराशा ३. मरने का ढंग ४. आकाश की लाली
५. ईश्वरीय आवाज़

क़िता

पा-ब-ज़ंजीर[१] नक़ाहत[२] से हूं मजबूरी है
कशिशे-बज़्मे-सुख़न से मुझे इन्कार नहीं
तने-ख़ाकी परे - परवाज़[3] कहां से लाये
दिल तड़पता है क़दम मायले-रफ़्तार नहीं
बा-कमालों[४] की ज़ियारत[५] हो, तमन्ना है यही
वर्ना मुझको हवसे - गर्मिए - बाज़ार[६] नहीं
मंज़िले - ऐश मुझे गोशाए - गुमनामी[७] है
दिल वो यूसुफ़ है जिसे फ़िक्रे - ख़रीदार नहीं
रौनक़े-बज़्म नहीं मेरे क़दम की मोहताज
फ़िक्र बेकार है फूलों में अगर ख़ार नहीं
ज़िक्र क्यों आयेगा बज़्मे-शोअ़रा[८] में अपना
मैं तख़ल्लुस का भी दुनिया में गुनहगार नहीं

१. विवश २. कमज़ोरी ३. उड़ने के पंख ४. विद्वानों ५. दर्शन
६. ख्याति का लोभ ७. अप्रसिद्धि का कोना ८. कवियों की सभा

जल्वाए मारफ़त

(फ़ल्सफ़ाए-वेद)

फ़ैज़े-क़ुदरत[1] से जो तक़दीर खुली ग्रालम की
साहिले-हिन्द पे वह्दत[2] की तजल्ली चमकी
मिट गई जहल[3] की शब, सुबह का तारा चमका
ग्रार्यावर्त की क़िस्मत का सितारा चमका
ग्रहले - दिल पर हुई कैफ़ीयते - इरफ़ां[4] तारी[5]
जिससे दुनिया में हुई दीन की नहरें जारी
थीं खुली जल्वा - गहे - ख़ास[6] में राहें उनकी
वाक़िफ़े - राज़े - हक़ीक़त[7] थीं निगाहें उनकी
ग्रर्श से उनके लिए नूरे-ख़ुदा ग्राया था
बंदए-ख़ास थे, ऋषियों का लक़ब[8] पाया था
वेद उनके दिले-हक़-केश[9] की तसवीरें हैं
जल्वाए - क़ुदरते - माबूद[10] की तफ़सीरें[11] हैं
ऐन कसरत[12] में ये वह्दत[13] का सबक़ वेद में है
एक ही नूर है जो ज़र्रा-ग्रो-ख़ुरशेद[14] में है
जिस से इन्सान में है जोशे - जवानी पैदा
उसी जौहर से है मौजों में रवानी पैदा

---

१. प्रकृति की कृपा २. ब्रह्म-ज्ञान ३. ग्रज्ञान ४. ज्ञान की मस्ती
५. छायी ६. ईश्वर का सामीप्य ७. ग्राध्यात्मिक ज्ञान से परिचित
८. दूसरा नाम ९. पवित्र हृदय १०. ईश्वरीय ज्योति ११. व्याख्याएं
१२. ग्रनेकता १३. एकता १४. सूर्य ग्रौर रज-कण

रंग गुलशन में, फ़ज़ा दामने - कोहसार में है
खूं रगे-गुल में है, नश्तर की ख़लिश ख़ार में है
तम्कनत[1] हुस्न में है जोश है दीवाने में
रोशनी शमअ़ में है, सोज़ है परवाने में
रंगो-बू होके समाया वही गुलज़ारों में
आब बनकर वही बरसा किया कोहसारों[2] में
शौक़ होकर दिले-मजज़ूब[3] पे छाया है वही
दर्द बनकर दिले-शायर में समाया है वही
नूरे - ईमां से जो पैदा हो सफ़ा[4] सीने में
अक्स उसका नज़र आता है इस आईने में

१. शान २. पहाड़ों ३. ईश-मग्न हृदय ४. चमक

पंचम भाग

[मश्क़-इब्तदाई का कलाम]

कश्मीर

पानी में है चश्मों के असर आबे-बक़ा[1] का
हर नख़्ल[2] पे आलम ख़िज़रे-सब्ज़-क़बा[3] का
जो फूल है गुलशन में वो है नूर ख़ुदा का
साये में शजर के असर ज़िल्ले-हुमा[4] का
मुब्दा[5] करमे-आम[6] की हर जूए-रवां[7] है
सरचश्माए-फ़ैज़े - चमन - आराए - जहां[8] है

वह मौजे-हवा का हरकत आब को देना
चश्मों से पहाड़ों के वो उड़ता हुआ फेना
गाते हुए मल्लाहों का वह कश्तियां खेना
डल का वो सरे-शाम इधर करवटें लेना
वह अक्स चिराग़ों का झलकता नज़र आना
पानी का सितारा भी चमकता नज़र आना

हर लालाए-कुहसार[9] है शक्ले-गुले-राहत[10]
दाग़ उसके हैं ख़ाले-रुख़े-हूराने-मसर्रत[11]

---

१. अमृत २. पेड़ ३. हरे कपड़ों वाले बुजुर्ग खिज्र ४. हुमा का साया (कहते हैं जिस पर हुमा पक्षी का साया पड़ता है वह राजा हो जाता है) ५. मूल स्रोत ६. ईश्वरीय कृपा ७. बहती हुई नहर ८. ईश्वर की कृपा का मूल स्रोत ९. पहाड़ी लाले का फूल १०. सुख पुष्प की भांति ११. प्रसन्नता की हूरों के गाल का तिल

क्या सब्ज़ाए-ख़ुशरंग है सरमायाए-इशरत
दिल के लिए ठंडक है जिगर के लिए फ़रहत
ऐसा नहीं क़ुदरत ने किया फ़र्श कहीं पर
इस रंग का सब्ज़ा ही नहीं रूए-ज़मीं पर

"वह सुबह को कुहसार में फूलों का महकना
वह झाड़ियों की आड़ में चिड़ियों का चहकना
गर्दू[१] पे शफ़क़[२], कोह[३] पे लाले का लहकना
मस्तों की तरह अब्र के टुकड़ों का बहकना
हर फूल की जुम्बिश से अयां[४] नाज़ परी का
चलना वो दबे पांव नसीमे-सहरी का"

वह ताइरे-कुहसार[५] लबे-चश्माए-कुहसार[६]
वह सर्द हवा, वह करमे-अब्रे-गुहरबार[७]
वह मेवाए-ख़ुशरंग वो सरसब्ज़ चमनज़ार
इक आन में सेहत हो जो बरसों का हो बीमार
यह बाग़े - वतन रूकशे - गुलज़ारे - जनां[८] है
सरमायाए - नाज़े - चमन - आराम - जहां[९] है

है ख़ित्ता-ए-सरसब्ज़ में इक नूर का आलम
हर शाख़े-शजर पर शजरे-तूर[१०] का आलम
परवीं[११] है ये है ख़ोशाए-अंगूर[१२] का आलम
हर ख़ार पे भी है मिज़ाए-हूर[१३] का आलम

---

१. आकाश २. लाली ३. पर्वत ४. प्रकट ५. पहाड़ी ६. पहाड़ी सोते के किनारे ७. बादल की कृपा ८. स्वर्ग की भांति ९. ईश्वर को प्रिय १०. तूर पहाड़ का पेड़ जिस पर ईश्वरीय प्रकाश हुआ था ११. सितारे १२. अंगूर का गुच्छा १३. हूर की पलक

निकली न सदा ऐसी मुग़न्नी[1] के गुलू[2] से
आती है जो आवाज़े-तरन्नुम लबे-जू से

मेवों से गिरांबार[3] वो अशजार[4] के डाले
बिखरे हुए वो दामने-कुहसार के लाले
उड़ते हुए बालाए-हवा बर्फ़ के झाले
देखे जो कोई दूर से हैं रूई के गाले

वह अब्र के लक्कों[5] का तमाशा शजरों में
झरनों की सदाएं वो पहाड़ों के दरों में

छूटे हुए इस बाग़ को गुज़रा है ज़माना
ताज़ा है मगर इसकी मुहब्बत का फ़साना
आलम ने शरफ़ जिनकी बुज़ुर्गी का है माना
उट्ठे थे इसी ख़ाक से वो आलिमो-दाना

तन जिनका है पैवन्द अब इस पाक ज़मीं का
रग-रग में हमारी है रवां ख़ून उन्हीं का

हां मैं भी हूं बुलबुल उसी शादाब चमन का
है चश्माए-फ़िरदौस[6], ये आलम है दहन[7] का
किस तरह न सरसब्ज़ हो गुलज़ार सुख़न[8] का
है रंग तबीयत में चमनज़ारे-वतन का

ताज़े हैं मज़ामीं[9] भी, तबीयत भी हरी है
हां गुलशने-क़ौमी की हवा सर में भरी है

१. गायक २. कंठ ३. भारी ४. पेड़ों ५. टुकड़ों ६. स्वर्ग का झरना ७. मुंह ८. काव्य ९. विषय

नौजवानों की हालत

मौजूद है जिन बाजुओं में ज़ोरे-जवानी
तूफ़ां से उन्हें कश्तिए-क़ौमी है बचानी
पर है मए-ग़फ़लत से सरों में ये गिरानी
आराम-पसंदी में ये रखते नहीं सानी
पहलू में किसी के दिले-दीवाना नहीं है
हैं मर्द मगर हिम्मते-मरदाना नहीं है

इबरत[1] नहीं देता इन्हें नैरंगे - ज़माना[2]
उम्र इनकी फ़क़त लहवो-लग्रब[3] का है फ़साना
तालीम कहां और कहां सोहबते - दाना
बस पेशे-नज़र रहता है आईना-ओ-शाना
गह रुख़ पे, गहे मूए-परीशां[4] पे नज़र है
इक शग़्ल यह इनके लिए शामो-सहर है

मिट्टी में ये क़ुदरत के अतीये[5] हैं मिलाते
कुछ नश्वो-नुमा जौहरे-ज़ाती नहीं पाते
इज़्ज़त जो बुज़ुर्गों की है वह भी हैं गंवाते
बाज़ारों में दौलत हैं जवानी की लुटाते
काशानाए-तहज़ीब[6] संवरता नहीं दम भर
वह नश्शा चढ़ा है कि उतरता नहीं दम भर

१. सीख २. समय के परिवर्तन ३. खेल-कूद ४. बिखरे बाल
५. देन ६. सभ्यता का आगार

पासे-अदब-ओ-हुस्ने-लियाक़त[1] नहीं रखते
पाकीज़ा-ओ-पुरजोश तबीयत नहीं रखते
आँखों के लिए सुरमाए-इबरत नहीं रखते
दिल रखते हैं पर दर्दे-मुहब्बत नहीं रखते

क्या ग़म है चमन क़ौम का वीरां कि हरा है
नख़वत[2] की हवा से सरे-शोरीदा[3] भरा है

हिम्मत नहीं, लेकिन दिले-पुरजोश पे नाज़ां
बेहोशे-ख़िरद[4] हैं, ख़िरदो-होश[5] पे नाज़ां
बद-शक्ल हैं, पर चश्मो-लबो-गोश[6] पे नाज़ां
कम-ज़र्फ़ कोई अपने तनो-तोश पे नाज़ां

नैरंगिए-अफ़लाक[7] 'का डर इनको नहीं है
फ़िरऔन हैं, मूसा की ख़बर इनको नहीं है

मुफ़लिस हैं, 'मगर ख़ब्त अमीरों से सिवा हैं
अच्छे ये असीरे - क़फ़से - हिर्सो - हवा[8] हैं
नामूस के तालिब हैं न पाबंदे-हया हैं
सीरत से ग़रज़ कुछ नहीं सूरत पे फ़िदा हैं

परवा नहीं मांगे का अगर जामाए-तन हो
सौदा है तो यह है कि न दामन पे शिकन हो

---

१. सभ्यता, शालीनता २. घमंड ३. पागल सर ४. मूर्ख ५. बुद्धिमानी ६. आंख, होंट, कान ७. भाग्य-परिवर्तन ८. लालच में फंसे हुए

खुद शाने - रियासत से हुए जाते हैं बरबाद
गो हुजराए-कुल्फ़त[१] में कुढ़े मादरे-नाशाद
देखे न सुने खल्क़ में इस तरह के आज़ाद
क्या बाअ़से-इब्रत[२] हो इन्हें क़ौम की फ़रियाद

जो शर्म से मैले न हों तेवर हैं ये इनके
"दिल रखते हैं फ़ौलाद का जौहर हैं ये इनके"

बस नफ़्स-परस्ती[३] को समझते हैं ये राहत
हिस्से में नहीं इनके जवानी की लताफ़त
वह जौहरे-आ़ली है न वह हुस्ने-लियाक़त
जिनसे कि है पाती परे-परवाज़[४] तबीयत

आता है नज़र और समां अर्ज़ो-समा[५] में
उड़ता है बशर आ़लमे-बाला की हवा में

रग-रग में वो बिजली की तरह खूं की रवानी
हर मूए-बदन[६] जिससे रगे-जां का हो सानी
अल्ला रे बहारे - चमनिस्ताने - जवानी
चलती नहीं भूले से यहां बादे-ख़िज़ानी[७]

तारोफ़ हो क्या इस चमनिस्तां के समर[८] की
कांटे में भी जिसके हो नज़ाकत गुले-तर की

१. कष्ट २. सीख देने वाली ३. स्वार्थ ४. उड़ने के पंख ५. ज़मीन, आसमान ६. बाल ७. पतझड़ की हवा ८. फल

लेकिन नहीं यह ताज़ा समर इनको मयस्सर
तारीफ़ में जिसकी है फ़रिश्तों की ज़बां तर
गो बाग़े-जवानी की हवा के हैं ये खूगर[1]
फूलों से नहीं इसके दिमाग़ इनका मुअत्तर

दरपेश इन्हें आलमे-ग़ुरबत[2] है वतन में
बेगाना हैं सब्ज़े की तरह रहके चमन में

जो साहबे-तहज़ीब हैं और साहबे-जौहर
उनमें भी नहीं क़ौम के हमदर्द मयस्सर
है सर में हवा हिर्स[3] की, दिल में हवसे-ज़र
दुनिया के ये हामी हैं न हैं क़ौम के रहबर

बस ज़र[4] की परस्तिश[5] इन्हें फ़र्ज़े-अज़ली[6] है
बुत है तो यही है जो ख़ुदा है तो यही है

१. अभ्यस्त २. परदेस ३. लालच ४. धन ५. पूजा ६. प्रथम कर्तव्य

मज़हब

सौदाए - मुहब्बत में इन्हीं के नहीं ख़ामी
ख़ुदबीनी से ख़ाली नहीं मज़हब के भी हामी
इरफ़ां[1] की ख़बर लाती हो गो तबए-गिरामी[2]
है नफ़्स की मंज़ूर हक़ीक़त में ग़ुलामी
कुछ क़ौम की परवा है न फ़िक्रे-कहो-मह[3] है
हो जाये नजात अपनी, तमन्ना है तो यह है

आलम के दिखाने के लिए ख़ाक-नशीं हैं
दावा है कि हम मालिके-फ़िरदौसे-बरीं[4] हैं
दुनिया की तरक़्क़ी से सदा चीं-ब-जबीं हैं
गोया कि यही राज़े-इलाही[5] के अमीं हैं
जो और हैं वो मारफ़ते-हक़[6] से जुदा हैं
बस एक यही बन्दाए - मक़बूले - ख़ुदा हैं

इंसां की मुहब्बत को समझते हैं ये आज़ार
हमदर्दी-ए-क़ौमी से इन्हें आये न क्यों आर
रहते हैं सदा फ़िक्र में उक़्बा[7] की गिरफ़्तार
दुनिया के फ़रायज़ से नहीं इनको सरोकार
यूं जादाए-तसलीमो-रज़ा[8] मिल नहीं सकता
इनमें वो ख़ुदी है कि ख़ुदा मिल नहीं सकता

१. ब्रह्म-ज्ञान २. दिमाग़ ३. छोटे-बड़े की चिन्ता ४. स्वर्ग के स्वामी ५. ईश्वरीय भेद ६. ब्रह्म-ज्ञान ७. परलोक ८. ईशेच्छा पर चलने का मार्ग

पीराने-निकोकार

कुछ और ही तीनत के हैं पीराने-निकोकार[१]
करते हैं वो इख़लाक़ से मज़हब को सुबकबार[२]
कहने को तो हैं दीन के हामी-ओ-मददगार
और करते हैं तलक़ीन[३] ये सबको सरे-बाज़ार
क़ायम न रहो बहरे-ख़ुदा सिद्क़े-बयां[४] पर
जो दिल में तुम्हारे है वो लाओ न ज़बां पर

मंज़ूर इन्हें पैरवीए-अहदे-कुहन[५] है
मज़हब यही इनका है, यही हुब्बे-वतन है
कोशिश है कोई नेक न तदबीरे-हसन है
ईमान के परदे में फ़क़त पासे-सुख़न[६] है
इन लोगों को दुनिया की सताइश[७] से ग़रज़ है
मज़हब न हो, मज़हब की नुमाइश से ग़रज़ है

लेकिन नहीं इख़लाक़ से कुछ इनको सरोकार
यह तर्ज़े-अमल क़ाबिले-तहसीं नहीं ज़िनहार
बातिन[८] में जिस इंसान के अच्छे नहीं किरदार[९]
ज़ाहिर की नुमाइश से वो होता नहीं दींदार
दिल सूरते-आईना जो रोशन नहीं होता
ज़ुन्नार[१०] पहनने से बरहमन नहीं होता

---

१. धार्मिक बुज़ुर्ग लोग २. हल्का ३. उपदेश ४. सच्चाई ५. पुराण-पंथी ६. बातें ७. प्रशंसा ८. दिल ९. चरित्र १०. जनेऊ

मुर्दा है, रवां रूह हो गर जिस्मे - बशर से
कांटा है, जुदा हो जो नज़ाकत गुले-तर से
है मिस्ले-ख़ज़िफ़[1], दूर सफ़ा[2] हो जो गुहर से
आईनाए - बे - आब उतरता है नज़र से
मज़हब, बजुज़-इख़लाक़[3] रवा हो नहीं सकता
मानी से कभी लफ़्ज़ जुदा हो नहीं सकता

◇ ◇ ◇

जल्वए-सुबह

जब ज़ंगे-शब[4] आईनाए-हस्ती[5] से हुआ दूर
हंगामे-सहर[6] कौनो-मकां[7] हो गये पुर-नूर
तब्दील हुई सूरते - कोहे - शबे - दैजूर[8]
चमका वो तजल्लीए-सहर[9] से सिफ़ते-तूर
बिजली की तरह चर्ख़[10] पे नूरे-सहर आया
आंखों को न फिर ख़िरमने-अंजुम[11] नज़र आया

१. सीप की तरह २. आब ३. नैतिकता से अलग ४. रात्रि-रूपी मैल ५. जीवन-रूपी दर्पण ६. सुबह के समय ७. सारा संसार ८. रात्रि-रूपी पर्वत का रूप ९. प्रभात ज्योति १०. आकाश ११. सितारों का खलिहान

थी नूर में तफ़रीह[1] , तो नूर अर्ज़ो-समा[2] में
सरगर्मी बशर में थी, बशर यादे-ख़ुदा में
थी ताज़गी ख़ुनकी में तो ख़ुनकी थी हवा में
शादाबी थी नकहत[3] में तो नकहत थी सबा में
खुर्शीदे - मुनव्वर[4] का दमे-जल्वागरी था
नूरे - रुख़े - महताब[5] चिराग़े-सहरी[6] था

दरियाए-फ़लक[7] में था अजब नूर का आलम
चक्कर में था गर्दाब-सिफ़त[8] नय्यरे - आज़म[9]
उठती थीं शुआओं की जो मौजें वो शरर-दम[10]
सय्यारे[11] हुबाबों की तरह मिटते थे पैहम
थी शोरिशे-तूफ़ाने-सहर ग़र्ब[12] से ता-शर्क़[13]
आख़िर को सफ़ीना[14] महे-गर्दूं का हुआ ग़र्क़

वह सुबह का आलम, वो चमनज़ार का आलम
मुर्ग़ाने-हवा[15] नग़्मा-ज़नी[16] करते थे बाहम[17]
हंगामे-सहर बादे-सहर[18] चलती थी पैहम
आराम से सब्ज़ा था तहे-चादरे-शबनम
हर सिम्त बँधी नाराए - बुलबुल[19] की हवा थी
ग़ुंचों की नसीमे - सहरी उक़्दा - कुशा[20] थी

१. सुख २. पृथ्वी-आकाश ३. सुगंध ४. चमकता सूर्य ५. चन्द्रमा की ज्योति ६. सुबह का दीपक ७. आकाश-रूपी नदी ८. भंवर की भांति ९. सूर्य १०. चिंगारी की भांति ११. सितारे १२. पश्चिम १३. पूर्व तक १४. नाव १५. उड़ने वाले पक्षी १६. गाना १७. एक साथ १८. सुबह की हवा १९. बुलबुल का गाना २०. खिलाने वाली

जो नख़्ल[1] था गुलशन में वो सरसब्ज़ खड़ा था
दामाने - सहर में गुले - ख़ुर्शीद[2] पड़ा था
क्या ख़ूब मुक़द्दर चमनिस्तां का लड़ा था
हर गुल पे गुहर[3] क़तराए-शबनम का जड़ा था

बुलबुल कहीं, ताऊस[4] कहीं घूम रहे थे
मस्तों की तरह नख़्ले - चमन झूम रहे थे

मुर्ग़ाने - चमन[5] आलमे - हस्ती में सहर-दम[6]
वस्फ़े-चमन-आराए-जहां[7] करते थे बाहम
शाखें थीं कहीं गर्दने-तसलीम-सिफ़त[8] ख़म
तस्बीहे-ख़ुदा[9] में हमातन[10] महव थी शबनम

ग़ुचों को भी थी विर्दे-ज़बां[11] हम्द[12] ख़ुदा का
आती थी चटकने में सदा 'सल्ले-अल्ला'[13] की

था पेशे - नज़र वादिए - ऐमन[14] का तमाशा
हर शाख़ो-शजर में शजरे-तूर का नक़्शा
था आतिशे - गुल में असरे - बर्क़े - तजल्ला[15]
मदहोश थे मुर्ग़ाने - हवा सूरते - मूसा

शक्ले-यदे-बैज़ा[16] थी हरइक शाख़ नज़र में
एजाज़[17] का गुल था कफ़े-गुलचीने-सहर[18] में

---

१. पेड़ २. सूर्य-रूपी फूल ३. मोती ४. मोर ५. पक्षी ६. प्रातः-काल ७. ईश-प्रशंसा ८. पूजा में झुकी गर्दन की भांति ९. माला फेरना १०. पूरी तरह ११. ज़बान पर १२. प्रार्थना १३. 'ख़ुदा की रहमत हो' १४. तूर पहाड़ की घाटी १५. ईश्वरीय ज्योति १६. मूसा के हाथ की भांति १७. जादू १८. प्रातःकाल रूपी माली की हथेली

रौनक़ पे दमे - सुबह था ख़ुमख़ानाए-आलम[1]
थमथम के हवा चलती थी, सर्दी भी थी कम-कम
पैमानाए - महताब था लबरेज़ सहर-दम
था जाम सबूही[2] का लिये नैयरे - आज़म
गर्दू[3] पे सुबह की भी अजब जल्वागरी थी
मीनाए - फ़लक[4] में मए - गुलरंग[5] भरी थी

बरसात

है दिलाती यादे-मैनोशी[6] फ़ज़ा बरसात की
दिल बढ़ा जाती है आ-आकर घटा बरसात की
बढ़ गयी है रहमते-हक़[7] से हवा बरसात की
नाम खुलने का नहीं लेती घटा बरसात की
उग रहा है हर तरफ़ सब्ज़ा दरो-दीवार पर
इन्तहा गर्मी की है और इब्तदा बरसात की
देखना सूखी हुई शाख़ों में भी जान आगयी
हक़ में पौदों के मसीहा है हवा बरसात की
हो शरीके-बज़्मे-मै ज़ाहिद[8] भी तौबा तोड़कर
झूमती क़िबले[9] से उट्ठी है घटा बरसात की

१. संसार-रूपी मदिरालय २. सुबह की शराब ३. आकाश
४. आकाश-रूपी प्याला ५. लाल शराब ६. मद्यपान की याद
७. ईश-कृपा ८. धार्मिक लोग ९. काबा

अस्ल तो यूं है मै-ओ-माशूक़[1] का जब लुत्फ़ है
चांदनी हो रात को, दिन को घटा बरसात की
वह पपीहे की सदाएं[2] और वह मोरों का रक़्स[3]
वह हवाए-सर्द, वह काली घटा बरसात की
पार उतर जायेंगे बह्रे-ग़म[4] से रिंदे-बादा-नोश[5]
ले उड़ेगी कश्तिए-मै[6] को हवा बरसात की
खुद-ब-खुद ताज़ा उमंगें जोश पर आने लगीं
दिल को गरमाने लगी ठंडी हवा बरसात की
वो दुआएं मैकशों[7] की और वो लुत्फ़े-इन्तज़ार
हाय किन नाज़ों से चलती है हवा बरसात की
मैं ये समझा अब्र[8] के रंगीन टुकड़े देखकर
तख़्त परियों के उड़ा लायी हवा बरसात की
नाज़ हो जिसको बहारे-मिस्रो-शामो-रूम पर
सरज़मीने-हिन्द में देखे फ़ज़ा बरसात की

१. मदिरा और सुंदरी २. आवाजें ३. नाच ४. दुख-सागर
५. मद्यप ६. शराब-रूपी नाव ७. शराबियों ८. बादल

कलामे-मुतफ़र्रिक़

मेरी बेख़ुदी[1] है वो बेख़ुदी कि ख़ुदी का वह्मो-गुमां नहीं
ये सुरूरे - साग़रे - मै[2] नहीं, ये ख़ुमारे - ख़्वाबे - गिरां[3] नहीं
जो ज़हूरे - आलमे - ज़ात[4] है ये फ़क़त हजूमे - सिफ़ात[5] है
है जहां का और वजूद[6] क्या जो तिलिस्मे-वह्मो-गुमां नहीं
ये हयात आलमे - ख़्वाब है, न गुनाह है न सवाब है
वही कुफ़्रो-दीं में ख़राब है जिसे इल्मे - राज़े - जहां[7] नहीं
वो है सब जगह जो करो नज़र, वो कहीं नहीं जो है बे-बसर[8]
मुझे आज तक न हुई ख़बर वो कहां है और कहां नहीं
न वो ख़ुम[9] में बादा[10] का जोश है न वो हुस्ने-जल्वा-फ़रोश[11] है
न किसी को रात का होश है, वो सहर[12] को शब का समां नहीं
वो ज़मीं पे जिनका था दबदबा कि बुलन्द अर्श[13] पे नाम था
उन्हें यूं फ़लक ने मिटा दिया कि मज़ार तक का निशां नहीं

मग़रिब के बोस्तां[14] पे जो रंगे-ख़िज़ां नहीं
सुनते हैं उस ज़मीन पे यह आसमां नहीं
कुछ और है वो शायरे-मोजिज़-बयां[15] नहीं
जिसके सुख़न[16] से रंगे-तबीयत अयां नहीं

१. आत्म-विस्मृति २. शराब का नशा ३. गहरी नींद का ख़ुमार ४. ईश्वरीय रूप का स्पष्ट होना ५. ईश्वरीय गुणों का समूह ६. अस्तित्व ७. संसार के रहस्य का ज्ञान ८. न देखने वाला ९. मटका १०. शराब ११. प्रेयसी १२. सुबह १३. सातवां आसमान १४. बाग़ १५. चमत्कारी कवि १६. काव्य

बुलबुल की तरह शोर मचाते हैं रात-दिन
जो आशनाए - लज़्ज़ते - दर्दे - निहां[1] नहीं
मज़मूने - आबदार[2] हैं दुरहाए - शाहवार[3]
दरियाए - नूर है, मेरी तबअ़ए - रवां[4] नहीं
इज़्हारे - दर्द ग़ैर से करते हैं बुलहवस[5]
हमको दिमाग़े - नाला-ओ-आहो - फ़ुग़ां नहीं
उस मुर्दा-दिल को ख़ाक नहीं ज़िन्दगी का लुत्फ़
जिसकी शबाब में थी तबीयत जवां नहीं
दोशे - सबा[6] पे रहता हूं मानिंदे-मुर्ग़े-बू[7]
शाख़े-शजर[8] को बार[9] मेरा आशियां नहीं
जादू किसी के हुस्न का चलता है रात-दिन
बेकार नक़्श - बंदिए - कोनो - मकां[10] नहीं
क्या देखते ही देखते दुनिया बदल गयी
वल्लाह ! वह ज़मीं नहीं वह आसमां नहीं

अभी नया जोश इश्क़ का है सलाह सुनते नहीं किसी की
करेंगे आख़िर में फिर वही हम जो चार यार-आशना कहेंगे

---

१. छुपे दुख के मजे से परिचित २. सुन्दर विषय ३. क़ीमती मोती ४. काव्य-शक्ति ५. वासना में फंसे लोग ६. हवा का कंधा ७. सुगंध की भांति ८. पेड़ की डाल ९. बोझ १०. संसार का निर्माण

हमारे और ज़ाहिदों[1] के मज़हब में फ़र्क़ अगर है तो इस क़दर है
कहेंगे हम जिसको पासे - इंसां[2] वो उसको ख़ौफ़े - ख़ुदा कहेंगे

गुल नहीं तो बूए-गुल ही से मुअत्तर हो दिमाग़
कोई रख देता क़फ़स मेरा हवा के सामने
रंजो-राहत का सबब दुनिया में कुछ पाया नहीं
हश्र में हम साफ़ कह देंगे ख़ुदा के सामने

रूह को अपनी है इश्क़े-जौहरे-हुस्ने-लतीफ़[3]
गुल से बढ़कर है ख़याले-रंगो-बू मेरे लिए
ख़ाना-वीरानी मेरी सब चाहते हैं शक्ले-दुर[4]
इक बलाए - जां है मेरी आबरू मेरे लिए
क़तराए-शबनम जिसे तूफ़ां है वो बुलबुल हूं मैं
बूए - गुल है बाअसे - दर्दे - गुलू[5] मेरे लिए
रूहो-क़ालिब[6] की तरह रोज़े-अज़ल[7] पैदा हुआ
लखनऊ के वास्ते मैं, लखनऊ मेरे लिए

१. कर्म-कांडियों २. मानव-प्रेम ३. निर्मल सौंदर्य का प्रेम ४. मोती की तरह ५. गले के दर्द का कारण ६. देह और आत्मा ७. आदि दिवस